पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

सितंबर 2017

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार
(प्रथम पुरस्कार)

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

पी.एस.बी.

(राजभाषा विभाग)

कीर्ति पुरस्कार

बैंक को भारत सरकार गृह मंत्रालय का सर्वोच्च कीर्ति पुरस्कार 'क' क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। चित्र में राजभाषा शील्ड के साथ हैं, बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिंदरबीर सिंह (आई.ए.एस.), महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री वीरेन्द्र गुप्ता, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली तथा प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग के समस्त अधिकारी गण।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाउस', प्रथम तल, 21, राजेंद्र प्लेस, नई दिल्ली-1100 125

सितंबर, 2017

मुख्य संरक्षक

श्री जतिन्दरबीर सिंह, आई.ए.एस.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री फरीद अहमद
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री वीरेन्द्र गुप्ता
महाप्रबंधक

संपादक व प्रकाशक

श्री राजिंदर सिंह बेवली
सहायक महाप्रबंधक
(राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री राजीव कुमार राय
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा

डॉ. नीरू पाठक
प्रबंधक

रूप कुमार
राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in

पंजीकरण सं. : एफ. 2(25) प्रैस. 91

(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 26 अक्तूबर 2017)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिक एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

मुद्रक : बी.एम. ऑफसेट प्रिन्टर्स

F-16, DSIIDC, Industrial Complex,
Rohtak Road, Nangloi, New Delhi - 110041
Ph. : 011-49147897, 9811068514

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी का संदेश	4-5
5.	वित्तमंत्री श्री अरुण जेटली जी का संदेश	6
6.	एक मुलाकात संगीतकार खय्याम से	7-9
7.	डिजीटल भुगतान को बढ़ावा देने के उपाय	10-11
8.	सं.रा.स. की तीसरी उपसमिति द्वारा बीकानेर शाखा का निरीक्षण	12-13
9.	बैंकिंग परिचालन में लाभप्रदत्ता बढ़ाने में भाषा और क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान	14-16
10.	वित्त मंत्रालय द्वारा निरीक्षण	17
11.	काव्य मंजूषा	18-19
12.	रस्म अदायगी	20
13.	प्रधान कार्यालय अंतर्विभागीय राजभाषा शील्ड	21
14.	कीर्ति पुरस्कार	22-23
15.	हिंदी/पंजाबी कार्यशाला	24
16.	पर्यावरण की महत्ता	25-28
17.	प्रधान कार्यालय अंतर बैंक प्रतियोगिता	29
18.	आपदाओं से जूझने में मॉक ड्रिल की भूमिका	30-31
19.	आँचलिक कार्यालयों में हिंदी दिवस	32-33
20.	प्रादेशिक भाषा - मलयालम भाषा में तथा हिंदी रूपांतर	34
21.	ग्राहक के मुख से	35
22.	स्वच्छ स्वस्थ तथा उन्नत भारत	36-38
23.	बैठक/संगोष्ठी	39
24.	निंदक नियरे राखिए.....	40
25.	कार्टून कोना/ज़रा सोचिए	41
26.	जननी	42
27.	विमोचन/हमें इन पर गर्व है	43
28.	हमारे अन्नदाता के साथ हैं क्या विधाता	44

आपकी कलम से.......

राजभाषा अंकुर पत्रिका का जून 2017 का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक और नवीन भारत की कल्पनाओं को साकार करता हुआ दिखाई दिया। 48 पेज की पत्रिका में विषयों का कुशल संयोजन किया गया है। इससे पत्रिका रोचक और विषय को प्रतिपादित करती हुई प्रतीत होती है। आमतौर पर इस प्रकार की पत्रिकाओं में तुष्टिकरण हेतु कार्मिकों के लेखों एवं चित्रों की भरमार होती है। किंतु अंकुर के इस अंक में सुश्री नीरू पाठक का पहला आलेख **ऐसे बना हमारा बैंक** जानकारी से परिपूर्ण है। विशेषरूप से पीएसबी परिवार में जुड़े हमारे नए साथियों को अवश्य प्रेरित करेगा। श्री कामेश सेठी का लेख **बैंकों में बढ़ता जोखिम** हमें सतर्क करता है। श्री प्रदीप राय की कहानी **अनाम रिश्ता** मानवीय संवेदनाओं को अनूठे तरीके से व्यक्त करती है। श्री नलिन हजारिका का लेख **नागालैंड का हार्निबिल महोत्सव** हमें उत्तर-पूर्व के राज्य की संस्कृति की जानकारी देता है वहीं मधुबनी चित्रकला के बारे में संक्षिप्त जानकारी हमें विस्तृत विवरण के लिए उत्साहित करती प्रतीत होती है। जरा सोचिए? लीक से हटकर एक नई सोच को जन्म देती है। कुछ नए कालम अंकुर की विशिष्टता है जोकि किसी अन्य बैंक की पत्रिकाओं में देखने को नहीं मिलते हैं .. उनमें **ग्राहक के मुख से,** प्रादेशिक भाषा में आलेख महत्वपूर्ण हैं। श्री जगमोहन सिंह मक्कड़ का लेख **बैंक और उसके विशेष ग्राहक** सूचनाप्रद होने के साथ साथ हमें काम करने में सहूलियत भी प्रदान करते हैं। कदाचित विकलांग शब्द के स्थान पर दिव्यांग शब्द प्रयोग किया जाने लगा है। काव्य - मंजूषा में श्री पवन कुमार जैन और उनके दिवंगत पुत्र मानव जैन की कविता पढ़कर मन को द्रवित कर देती है। काव्य के सामान्य गुण जहाँ कविता को जीवंत व कालजयी बना देते हैं वहीं अपने अनुभवों और भावों को जीकर कही गई कविता स्थितियों का चित्र खींचती हुई प्रतीत होती है। प्रिय मानव की कविता में प्रयोग किए गए प्रतीक और जूझने की ललक कहीं न कहीं हमें प्रेरित करती है। कविता यहीं पर अर्थपूर्ण एवं सार्थक हो जाती है। इन कविताओं का प्रकाशन संपादक महोदय के संवेदनशील ह्रदय को दर्शाता है।

यदि हम आम सरकारी पत्रिकाओं को देखें तो पाएंगे कि उनमें प्रूफ संबंधी इतनी गलतियाँ होती हैं कि पूरी पत्रिका बोझिल सी लगने लगती है और अच्छे भले लेख का सत्यानाश कर देती है। वहीं अंकुर के इस अंक में नाममात्र को भी प्रूफ संबंधी त्रुटि दिखाई नहीं दी। इसके लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

संजीव श्रीवास्तव

उप महाप्रबंधक, आँचलिक कार्यालय, मुंबई

'राजभाषा अंकुर' का जून 2017 अंक प्राप्त हुआ। स्मार्ट सिटी, डिजिटल इंडिया, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस तथा स्वच्छ भारत जैसे विविध विषयक चित्रों को समेटे पत्रिका का मुख पृष्ठ मनमोहक लगा। पंजाब एण्ड सिंध बैंक गठन की आधारभूत जानकारी से पाठकों को परिचित कराने वाला लेख 'ऐसे बना हमारा बैंक' अत्यंत रोचक है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न बैंकिंग विषयक लेख उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक हैं, 'बैंक और उसके विशेष ग्राहक' लेख अत्यंत साधारण भाषा में आवश्यक जानकारी देता है। श्री गुरू अर्जुनदेव जी पर आधरित स्मरण लेख मन को छू गया। ऐसे महापुरूष सदियों में जन्म लेते हैं और अनंतकाल तक जनमानस के लिए प्रेरणास्त्रोत बने रहते हैं। आपकी हिंदी/पंजाबी कार्यशालाएं अत्यंत प्रासंगिक लगीं। मधुबनी चित्रकला... हमारी सांस्कृतिक धरोहर से भरी है। 'अनाम रिश्ता', 'व्हाट्स अप और हमारा समाज' जैसी रचनाएं हमें सजग करती हैं।

'काव्य मंजूषा' का प्रकाशन संपादक मंडल की संवेदनशीलता का अनुपम उदाहरण है। अपने वरिष्ठ राजभाषा प्रबंधक श्री पवन कुमार जैन के पुत्र स्वर्गीय मानव जैन के लिए 'राजभाषा अंकुर' की ओर से दी गई श्रद्धांजलि मन को झकझोर गया। मानव जैन की संघर्षमय जिजीविषा के तमाम पलों का मैं भी साक्षी रहा हूँ। कैंसर रूपी काले साँप से लड़ते और कई बार जीतते हुए उसे मैंने देखा है। जीतकर भी हार जाने का दर्द पवन जैन के परिवार, दोस्तों और संबंधियों के साथ-साथ 'राजभाषा अंकुर' परिवार को भी उतनी ही गहराई से है। अपने स्टाफ के प्रति आपके इस प्रेम के हम कायल हैं। आपका यह सद्प्रयास दर्शाता है कि पंजाब एण्ड सिंध बैंक अपने स्टाफ के साथ कितने आत्मीय रिश्ते रखता है।

महाप्रबंधक (राजभाषा) का संपादकीय सटीक एवं संतुलित लगा। बैंक अध्यक्ष श्री जतिन्दर बीर सिंह (आई.ए.एस.) की चित्रमय झलकियां पत्रिका का गौरव बढ़ा रही हैं। आपके आंगन में 'राजभाषा अंकुर' का पौधा लहलहाता रहे।

ओम प्रकाश तिवारी

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक

हमें आपके बैंक की हिंदी पत्रिका ''पी.एण्ड एस.बैंक, राजभाषा अंकुर'' की नवीनतम अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद।

इस अंक में कई ज्ञानवर्धक लेख हैं जैसे - राजभाषाः तब और अब, डिजिटलीकरण और पारदर्शी अर्थव्यवस्था, इंटरनेट बैंकिंग जैसे प्रासंगिक लेख सचमुच महत्वपूर्ण व अर्थवान बन पड़े हैं। राजभाषा संबधी गतिविधियों से भरी पूरी पत्रिका में कहानी अनाम रिश्ता पठनीय लगी। कुल मिलाकर यह अंक रचनात्मक सामग्री से भरपूर है, एतदर्थ आपको एवं आपकी पूरी टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आगामी अंकों को इसी तरह ज्ञानवर्धक सामग्री से समर्थित करते रहेंगे, ऐसा विश्वास है।

शुभकामनाओं सहित,

विजय कुमार यादव

मुख्य प्रबंधक(राजभाषा), यूको बैंक, प्रधान कार्यालय कोलकाता

'पी.एण्ड एस. बैंक राजभाषा अंकुर' का नवीनतम अंक मिला, धन्यवाद। अत्यंत सुंदर कलेवर के साथ-साथ पत्रिका की सभी रचनाएं रूचिकर, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं। पत्रिका में साहित्य की विभिन्न विधाओं का ध्यान रखा गया है।, जो सराहनीय है।

पत्रिका के उत्कृष्ट सम्पादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

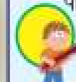

मुख्य प्रबंधक(राजभाषा)

यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, प्रधान कार्यालय, कोलकाता

संपादकीय

प्रिय साथियो,

''राजभाषा अंकुर'' के माध्यम से अपने मन की बात आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे सदैव ही खुशी होती है और इस बार तो विशेष रूप से हमारे लिए अत्यंत गौरव एवं प्रसन्नता की बात है कि दिनांक 14.09.2017 को हिंदी दिवस के अवसर पर विज्ञान भवन में आयोजित भव्य समारोह में हमारे बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिंदरबीर सिंह (आईएएस) ने माननीय राष्ट्रपति महोदय श्री रामनाथ कोविंद जी के कर कमलों से ''क'' क्षेत्र का कीर्ति पुरस्कार (प्रथम) प्राप्त किया। इसके लिए न केवल राजभाषा विभाग, अपितु बैंक के सभी कार्मिक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बधाई के पात्र हैं। इसके साथ ही हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में आप सभी ने बढ़-चढ़कर सहभागिता की। मैं, न केवल प्रतियोगिताओं के विजेताओं का, बल्कि जिन्होंने प्रतियोगिताओं में सहभागिता की, उन सभी का राजभाषा विभाग की ओर से आभार व्यक्त करता हूँ।

बैंक में राजभाषा को बढ़ावा देने में अंकुर पत्रिका भी अपनी भूमिका पूरे जोर-शोर से निभा रही है। प्रस्तुत अंक में भी राजभाषा की विभिन्न विधाओं संबंधी लेखों को समाहित कर, अनेकता में एकता के सूत्र का प्रतिपादन किया गया है। सुश्री शिखाश्री का लेख ''पर्यावरण की महत्ता'', कैप्टन धर्मपाल सिंह पुंडीर का लेख ''आपदाओं से जूझने में मॉक ड्रिल की भूमिका'' लेख ज्ञानवर्धक होने के साथ अनुकरणीय भी हैं। श्री सोहन सिंह कालड़ा रचित व्यंग ''रस्म अदायगी'' दिल को छू जाएगा। पत्रिका में आरंभ किया गया नया स्तंभ ''ग्राहक के मुख से'' बैंक के ग्राहकों को भी पत्रिका से जोड़ रहा है। मशहूर संगीतकार खय्याम हमारे ग्राहक हैं। पत्रिका में शाखा जुहू, मुंबई की प्रबंधक सुश्री चंद्राणी द्वारा लिया गया उनका साक्षात्कार ''एक मुलाकात : संगीतकार खय्याम के साथ'' पत्रिका का मुख्य आकर्षण है। इसके अतिरिक्त काव्य-मंजूषा, कहानी तथा अन्य साहित्यिक विधाओं से भरपूर यह अंक अत्यंत रुचिकर है। पत्रिका के बहुआयामी विकास के लिए भविष्य में भी आप सभी की सहभागिता अपेक्षित है।

आशा है 'राजभाषा अंकुर' का यह अंक भी आपको पंसद आएगा। पत्रिका आपको कैसी लगी। कृपया हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराएं।

(वीरेन्द्र गुप्ता)
महाप्रबंधक (राजभाषा)

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH
गृह मंत्री, भारत
HOME MINISTER, INDIA

सत्यमेव जयते

संदेश

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सब को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं !

''भाषा'' मानव, समाज और देश के संगठन की अंतःशाक्ति है। किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए भाषा-शक्ति आधार का काम करती है। किसी भी देश की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में उस देश की भाषा का अहम योगदान होता है। भाषा सिर्फ मनोभावों की वाहिका ही नहीं होती अपितु राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन होने के साथ ही सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता और अखंडता की एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है। किसी सुदृढ़ राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसकी अपनी भाषा कितनी व्यापक एवं समृद्ध है।

हमारे देश की सभी बोलियाँ और भाषाएँ हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक धरोहर हैं। अपनी भाषायी धरोहर की सजग होकर रक्षा करना प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य है।

''हिंदी'' को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। ''हिंदी-भाषा'' में भारत के वे विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्य विद्यमान हैं जिनकी वजह से हम पूरे विश्व में अतुलनीय हैं। भारत में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसने विविधता में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

किसी भी लोकतांत्रितक देश में जनता और सरकार के मध्य जन-जन की भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका निभा सकती है। हिंदी, भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ-साथ भारत की भावात्मक एकता को मज़बूत करने का भी सशक्त ज़रिया है। अपनी उदारता, व्यापकता एवं ग्रहणशीलता के कारण ही हिंदी भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था की पूरक है। अतः संविधान के अनुच्छेद 351 में संघ सरकार को यह महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया कि वह अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे, ताकि हिंदी भारतीय-संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति बहुत ही सहज और स्वाभाविक होती है, जो अनुवाद की भाषा से कदापि संभव नहीं है। आज जरूरत इस बात की है कि हिंदी को इसके सरलतम रूप में अपनाकर राजकीय कामकाज में ज़्यादा प्रयोग में लाया जाए। मैं, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों से अपील करता हूँ कि वे अपने दैनिक और सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिल सके।

हिंदी भाषा का समुचित ज्ञान ही हिंदी में कार्य करने का मुख्य आधार है। इसलिए अपने सभी कार्मिकों को हिंदी-ज्ञान में वृद्धि करने के लिए सभी प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों द्वारा अधिक से अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन हिंदी माध्यम में ही सुनिश्चित करना चाहिए। साथ ही, राजभाषा विभाग द्वारा जारी आदेशों के अनुसार कार्यालयों आदि द्वारा नियमित रूप से अभ्यास आधारित कार्यशालाओं का

आयोजन किया जाना चाहिए। इस प्रकार व्यावहारिक कार्य-योजना बनाकर अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिंदी में करने का सार्थक प्रयास करने की महती आवश्यकता है।

देशवासियो ! पिछले वर्षों से ''कम्प्यूटर'' और ''इन्टरनेट'' ने विश्व में सूचना क्रांति ला दी है। आज कोई भी भाषा कम्प्यूटर तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर रह कर लोगों से जुड़ी नहीं रह सकती। विगत कुछ समय से अनेक हिंदी ई-टूल्य विकसित किए गए हैं, जिससे कम्प्यूटर पर हिंदी कार्य करना अत्यंत सरल हो गया है। सूचना प्रौद्योगिकी के मौजूदा दौर में हमें विभिन्न हिंदी ई-टूल्स जैसे यूनिकोड, हिंदी की-बोर्ड, लाला सॉफ्टवेयर,मशीन अनुवाद, ई-महाशब्दकोश आदि का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करना चाहिए।

यह बात सही है कि संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है, परंतु संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व बनता है कि हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करते हुए अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएँ। राजभाषा की कार्यशालाओं/बैंकों में शीर्ष अधिकारियों की उपस्थिति अवश्य ही होनी चाहिए तथा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित ऑकड़े प्रस्तुत करते समय तथ्यपरकता का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन तथा उत्तरोत्तर विकास के लिए राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन भी उसी दृढ़ता के साथ किया जाना चाहिए जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है।

आइए, हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर हम यह प्रतिज्ञा करें कि हम एक साथ मिलकर मन, वचन और कर्म से हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय एवं सृजनात्मक सहयोग देंगे और हिंदी को उसके सम्मानजनक स्थान पर पहुँचा कर राष्ट्र का गौरव बढ़ाएंगे । हम सब, न सिर्फ इसे अपना संवैधानिक दायित्व मान कर बल्कि नैतिक दायित्व समझ कर सरकारी काम-काज के साथ ही साथ निजी जीवन में भी हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग पूरे मनोयोग से करें।

मेरे प्रिय देशवासियो ! हमें हिंदी का प्रचार-प्रसार केवल सरकारी स्तर तक सीमित न रखकर भारत के जन-जन तक ले जाना होगा। साथ ही, न केवल भारत अपितु पूरे विश्व में हिंदी भाषा का प्रकाश फेलाने का संकल्प लेना होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से हमें वांछित परिणाम अवश्य प्राप्त होंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सब को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं !

जय हिंद !

नई दिल्ली,
14 सितंबर 2017

अरुण जेटली
वित्त एवं कार्पोरेट कार्य मंत्री
भारत

Arun Jaitley
Minster of Finance & Corporation Affairs
India

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर मेरी शुभकामनाएं।

"चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी" वाले भारतवर्ष के लिए महात्मा गांधी ने हिंदी को जनमानस की भाषा कहा था। बहुसंख्य लोगों द्वारा बोली-समझी जाने वाली इस भाषा में ही देश को एकसूत्र में पिरोने वाले सभी तत्व मौजूद हैं। लोकतांत्रिक देश होने नाते राष्ट्र की सभी भाषाओं का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। हमारे बहुभाषी देश में सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक एकता कायम करने के लिए हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो इस भूमिका को भलीभांति निभा सकती है। इसीलिए, संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया। संविधान तथा राजभाषा अधिनियम के प्रावधानों का उद्देश्य है कि राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग संघ के कार्यकलापों में हो।

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रम/समारोह आयोजित किए जाने की परंपरा है। निःसंदेह, इन कार्यक्रमों से हिंदी में कार्य करने का माहौल बनता है और हमें हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। इस संबंध में, मैं यह भी कहना चाहूंगा कि कार्यालयों मे हिंदी का प्रयोग केवल एक दिवस या पखवाडे तक ही सीमित न रखें बल्कि इसे विस्तार देकर आप समस्त सरकारी कार्य प्रक्रियाओं में भी हिंदी को स्थान दें। हिंदी हमारे स्वाभिमान का प्रतीक है अतः पूरे उत्साह, सम्मान और गर्व से इसे अपनाएं।

आइए, हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के अपने सांविधानिक और नैतिक दायित्व को निभाने का संकल्प लें।

एक मुलाकातः संगीतकार खय्याम से

चंद्राणी पॉल

खय्याम साहब का इंटरव्यू लेती जुहू शाखा की वरिष्ठ प्रबंधक सुश्री चंद्राणी पॉल, और जगजीत कौर जी के साथ बैठी हैं शाखा की ही अधिकारी सुश्री इंदिथ लोपेज़।

शाखा जुहू में शाखा प्रबंधक के रूप में काम करते हुए मुझे कुछ ही समय हुआ है। बैंक में आने वाले सभी ग्राहकों को बैंक में किसी भी प्रकार की परेशानी न हो, इसका मैं व्यक्तिगत रूप से ध्यान रखती हूँ। लेकिन कुछ ग्राहक बेहद ख़ास होते हैं, जिनमें से एक हैं संगीत की दुनिया के बेताज बादशाह संगीतकार खय्याम। और जब मुझे राजभाषा अंकुर के संपादक श्री राजिंदर सिंह बेवली जी का फोन खय्याम जी का इंटरव्यू लेने के लिए आया जो मुझे तो मन चाही मुराद ही मिल गई और आनन-फानन में मैं खय्याम जी से समय लेकर अपनी बैंक की एक सहकर्मी को लेकर उनके घर पहुँच गई। प्रस्तुत है खय्याम जी के इंटरव्यू के कुछ खास अंश-

> मेरे फोन की घंटी बजी। फोन हमारी जुहू ब्रांच से था, मैडम इंदिथ लोपेज ने कहा कि लीजिए सर, खय्याम साहब से बात कीजिए। मैं बता नहीं सकता कि मुझे कितनी खुशी हुई उस समय। देश के जाने माने संगीतकार से बात करना निश्चित रूप से जीवन भर के लिए यादगार बनकर रह गया। खय्याम साहब ने मुझे उनके मशहूर गीतों की बात करने पर कहा कि मुझे बहुत ही अच्छा लगा कि आप ऐसे गीत पसंद करते हैं। वर्ना आज का दौर तो बदल चुका है, कहाँ सुने जाते हैं ऐसे गहराई भरे गीत। वयोवृद्ध होने के कारण पूरी बात फोन पर करना संभव न था तो मैंने शाखा की वरिष्ठ प्रबंधक सुश्री चंद्राणी पॉल से अनुरोध किया कि वे खय्याम साहब का पूरा इंटरव्यू मुझे भेजें।
> -राजिंदर सिंह बेवली, संपादक

चंद्राणीः फिल्मी दुनिया के महान संगीतकार को नमन करती हूँ।

खय्याम साहबः बेटा आपको बहुत आशीर्वाद। पंजाब एण्ड सिंध बैंक की स्टाफ मैंबर्स तो मुझे बेटियों जैसी लगती हैं, सुनाइए आप कैसी हैं और पूछिए क्या पूछना चाहती हैं।

चंद्राणीः जब आप मुंबई (तब का बंबई) नए-नए आए, तो उन दिनों आपको किन-किन कठिनाइयों से गुजरना पड़ा।

खय्याम साहबः मैं भाग्यशाली था कि मुझे बहुत कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा। कलकत्ता से जब मैं बंबई में आया तो मेरे पहले के गुरु पंडित हुस्नलाल भगतराम उन दिनों बंबई में ही थे जो उस समय की फिल्मों में टॉप पर थे और उनकी फिल्में लगातार हिट हो रही थीं और म्यूजिक तो उन जैसा कौन बना सकता था। उनके साथ थे उनके भाई पंडित आत्माराम जी। इन तीनों भाइयों ने मिलकर ऐसा काम किया कि कई सुपर डुपर हिट फिल्में दे डालीं। तो बंबई आने के बाद हमने सबसे पहले उनके यहाँ हाजरी भरी। गुरुओं ने कहा कि इतने समय बाद मिले हो, इतने दिनों में क्या सीखा? कुछ सुनाओ तो जानें। चिश्ती बाबा के साथ मैं काम कर ही चुका था तो मैंने पंडित जी को कुछ सुनाया और उन्हें वे पसंद आ गया। साथ ही मुझे 'नर्गिस आर्ट्स कंपनी' में प्लेबैक सिंगर का काम दे दिया गया और उस समय की मशहूर गायिका जोहरा जी के साथ एक दोगाना गाने का काम मिला। नर्गिस जी की वालिदा साहिबा को वो गीत बहुत पसंद आ गया तो नर्गिस जी की कंपनी में प्लेबैक सिंगिंग के साथ-साथ संगीत निर्देशन का कुछ काम भी मुझे मिल गया।

चंद्राणीः पर हमने तो सुना है कि बंबई में उन दिनों काम मिलना आसान नहीं होता था?

खय्याम साहबः बेटी, आप बिलकुल ठीक कह रही हैं। यहाँ बंबई में नए लोगों को स्टूडियो-स्टूडियो घूमना पड़ता है और चांस लेना आसान नहीं होता लेकिन मैं खुशनसीब था कि मुझे भटकना नहीं पड़ा। और फिर बहुत बड़े प्रोड्यूसर वली साहब और मुमताज शांति जी की 'पंजाब फिल्म कॉर्पोरेशन' में पाँच-छह फिल्में मिलीं। देखिए ये नाम भी 'पंजाब एण्ड सिंध बैंक' से मिलता जुलता नाम है, ये भी इत्तेफाक है। वली साहब और मुमताज शांति जी ने कहा कि यदि बना सकते हो तो कुछ टिपिकल पंजाबी बनाओ। मेरे साथ रहमान वर्मा साहब थे जो मुझसे सीनियर थे उन्होंने कहा कि हमें कोई गाना दे दीजिए, हम बनाते हैं आपको पसंद आए तो रख लीजिए नहीं तो मत रखिए। 'हीर रांझा' फिल्म में लड़कियों का भंगड़ा स्टाइल गीत बनाया। ईश्वर की, अल्लाह की, वाहेगुरु जी की कृपा हुई और वह भंगड़ा गीत हिट हो गया। मुझे अभी भी उसकी लाइनें याद हैं 'शहरों में से शहर चुना तो शहर चुना मुलतान, मैं मर गई शहर चुना मुलतान'। इस गीत के बाद हमें लोग जानने लग गए थे।

चंद्राणीः आप उस समय कितने साल के थे।

खय्याम साहबः आई वाज वैरी यंग, 20–21 साल का रहा होउँगा।

सन् 1947 जनवरी से कलकत्ता से हम लोग आए थे। चिश्ती बाबा के साथ काम करते थे उनके साथ लाहौर में भी काम किया था। चिश्ती साहब ने हमें कहा कि हम पहले काम अच्छी तरह सीख लें फिर तनख्वाह मिला करेगी। एक गैस्ट हाउस भी हमें दे दिया गया। उनका घर बहुत बड़ा था, बाद में उसी में एक कमरा हमें दे दिया गया। चिश्ती बाबा महागुरू थे संगीत के, बहुत ही नेक दिल इंसान थे।

चंद्राणीः हमने सुना है आपने फौज की नौकरी भी की है।

खय्याम साहबः जी बिलकुल सही सुना है। जब संगीत में पगार ही नहीं मिलती थी तो कहीं न कहीं अंदर से बुरा तो लगता ही था। मेरे भाईजान का बहुत अच्छा बिजनेस था लुधियाना में। मैं कुछ दिनों के लिए उनके पास चला गया। उन्होंने पूछा नौकरी करते हो। मैंने कहा जी हाँ करता हूँ, तो

तनख्वाह कितनी मिलती है? मैंने कहा जी चिश्ती बाबा के साथ मैं असिस्टेंट के रूप में काम कर रहा हूँ लेकिन अभी तनख्वाह तो नहीं मिल रही। भाई साहब को यह बात बुरी लगी और मुझे उन्होंने कुछ बुरा भला भी कहा। अच्छे आदमी हो, नौकरी करते हो पर तनख्वाह नहीं मिलती। मैंने भी फिर वापिस जाने की सोची उन्हीं की गाड़ी में लौट चला। रास्ते में देखा कि फौज में भर्ती के लिए बहुत बड़ा बोर्ड लगा है। मैं वहीं उतर गया और मेरा चयन फौज में सिपाही के रूप में हो गया। लेकिन अंदर का मन संगीत के बिना उदास रहने लगा। उस समय हम एमरजैंसी में भर्ती किए गए थे। अगले साल ऑर्डर आया जो एमरजैंसी में आए हैं यदि फौज छोड़ना चाहते हैं तो आवेदन कर सकते हैं। तो पहला आवेदन मेरा ही था और फिर पहुँच गया चिश्ती बाबा के पास। मिलट्री से हमें एक डिसिप्लिन मिला। बस इस तरह से फौज की नौकरी की भी और छोड़ भी दी।

चंद्राणीः और इस अनुशासन का क्या फिल्मों में भी कोई फायदा मिला?

खय्याम साहबः जी बिलकुल मिला। बेटी हम म्यूजिक वालों में सिगरेट, शराब आदि की आदत हो जाती है। मैं बीड़ी सिगरेट तब भी नहीं पीता था और आज भी नहीं पीता हूँ। बी आर चोपड़ा साहब की कंपनी में काम मिला था। अनुशासित होने के कारण म्यूजिक रूम में पहुँचने का सबसे पहला नंबर मेरा होता था और मेरे बाद बी. आर चोपड़ा साहब आते थे और उनके बाद बाकी लोग धीरे-धीरे आया करते थे। पे डे आता था। सबको लिफाफे दिए जाते मुझे कोई पे नहीं मिलती। चिश्ती बाबा अच्छे इंसान थे पर बड़े ही सख्त थे। बी आर चोपड़ा साहब ने पूछा तो चिश्ती बाबा ने कहा कि ये तो पे रोल पर हैं ही नहीं। ये तो सीख रहे हैं। तो चोपड़ा साहब ने कहा कि सबसे अधिक अनुशासन में रहने वाले खय्याम काम भी सबसे अधिक करते हैं। तो चिश्ती बाबा ने कहा कि यदि आप कहें तो दे देते हैं। तो उस दिन मुझे पहली तनख्वाह 125/- रुपए मिली। इसे आप अनुशासन और मेहनत का नतीजा भी मान सकती हैं। इसी मेहनत की बदौलत बाद में यश जी के साथ ऐसा संबंध हुआ कि बस परिवार ही बन गया।

'कभी कभी' और 'उमराव जान' जैसी फिल्मों के लिए फिल्मफेयर अवॉर्ड पा चुके खय्याम ने अपने करियर की शुरुआत 1947 में की थी। 'वो सुबह कभी तो आएगी', 'जाने क्या ढूंढती रहती है ये आंखें मुझमें', 'बुझा दिए हैं खुद अपने हाथों, 'ठहरिए होश में आ लूं', 'तुम अपना रंजो गम अपनी परेशानी मुझे दे दो', 'शामे गम की कसम', 'बहारों मेरा जीवन भी संवारो' जैसे अनेकों गीत में अपने संगीत से चार चांद लगा चुके हैं खय्याम।

चंद्राणीः अलग-अलग फिल्मों में अलग-अलग संगीत देना कठिन नहीं होता?

जगजीत कौर(धर्मपत्नी, खय्याम): एक ही टाइम में खय्याम साहब तीन फिल्में कर रहे थे 'कभी-कभी', 'बाज़ार' और 'उमराव जान'। और आप नोट कीजिए कि एक दूसरे से बिलकुल अलग म्यूजिक। रत्तीभर भी नहीं मिलता एक दूसरे से। ये काफी मुश्किल काम होता है लेकिन खय्याम साहब को संगीत की स्पष्टता बहुत ज्यादा है, इनकी एकाग्रता का तो जवाब ही नहीं।

चंद्राणीः 'कभी-कभी' जब आप बना रहे थे तो उस समय की कोई खास घटना या कहानी जो आप पाठकों को बताना चाहते हों।

खय्याम साहबः देखिए 'कभी-कभी' ये जो है, छोटी छोटी पोयम्स हैं जिन्हें उर्दू में 'नज़्म' कहते हैं और हिंदी में 'कविता'। आम गानों को 'गीत' कहते हैं। बाई दि ग्रेसऑफ गॉड कविताओं को संगीत देने का हुनर वाहेगुरू जी ने, ईश्वर ने, अल्लाह ने, गॉड ने मुझे खूब दिया है। 'मैं पल दो पल का शायर हूँ' या फिर 'कभी-कभी मेरे दिल में ख़याल आता है'।

चंद्राणीः हमने सुना है कि आप शायरी टाइप गाने बखूबी बनाते हैं और आपके गाने बड़ी ही गहराई से सुनने वाले होते हैं लेकिन इन गानों को रिक्शा पर घूमते फिरते या हल्के - फुल्के अंदाज़ में नहीं सुना जा सकता। तो क्या यह मान लिया जाए कि खय्याम साहब हल्का-फुल्का संगीत सुनने वालों के संगीतकार नहीं?

जगजीत कौर जी ने कहा कि सब लोग जिक्र किया करते थे कि ये पोयम्स का संगीत तो बना लेंगे लेकिन हल्के-फुल्के गीत भी बना सकेंगे या नहीं।

खय्याम साहबः 'मैं पल दो पल का शायर हूँ, पल दो पल मेरी जवानी है।' इस गीत पर पूरा युवा वर्ग बहुत खुश हुआ था। कभी-कभी के मुख्य लोग जब चाय पीने बैठे तो कहा कि खय्याम साहब, 'कभी-कभी' का काम बहुत ही अच्छा हुआ है सारी टीम बहुत खुश है आपसे, गानों की पिक्चराइजेशन भी बहुत अच्छी हुई लेकिन हम सब लोगों को एक चिंता है। मैंने पूछा क्या? तो बोले कि सभी को 'चींटू' की 'चिंता' है। 'चींटू' यानि कि ऋषी कपूर। सभी ने शायद यश जी के जहन में भर दिया था कि खय्याम साहब कविताओं पर गीत बनाने के तो विशेषज्ञ हैं लेकिन ऋषी कपूर के लिए गाने नहीं बना पाएंगे। मैंने केवल दो शब्द कहे यश जी से। यश जी आप चींटू की चिंता छोड़ दें, मैंने अपने गुरुओं से सीखा है काम, Now I can tackle any subject and any situation ! तो उसके बाद जब 'तेरे चेहरे से नज़र नहीं हटती.... नज़ारे हम क्या देखें-' बना तो सब मान गए।

चंद्राणीः तो आपने सिद्ध कर दिया कि खय्याम सिर्फ कविताएं ही नहीं, गीत भी अच्छे बना सकते हैं। और कुछ बताना चाहेंगे कभी-कभी के बारे में

खय्याम साहबः जी अभी 'कभी-कभी' मिली भी नहीं थी हमें और अभी तो हमें बुलाया भी नहीं गया था कि हमें एक फिल्म ऑफर हो गई 'रजिया सुलतान' तब तक की सबसे बड़ी फिल्म... कमाल अमरोही... हेमा मालिनी तो इस पिक्चर का गाना रिकॉर्ड हो गया 'ऐ दिल-ए-नादान.... ऐ दिल-ए-नादान'

चंद्राणीः वही रेगिस्तान वाला गाना ?

खय्याम साहबः जी हाँ। तो इस गाने ने पूरी फिल्म इंडस्ट्री में धूम मचा दी कि ऐसा गाना तो कभी रिकॉर्ड ही नहीं हुआ। तो उस रात लगभग डेढ़ या दो बजे हमारे घर की घंटी बजी। सब चौंक गए कि इस समय कौन आया है...... तो हमारे बेटे प्रदीप ने कहा कि आइए डैडी देख लीजिए कौन है, पहचान लीजिए..... कि इस समय आपसे मिलने कौन आया है।

जीवन में ज़मीर कभी न मरने दें।

तो मैंने देखा कि जया बच्चन जी खड़ी हैं और उनकी सहेली शम्मी जी, श्रीमती सुलतान अहमद। बहुत ही तहजीब वाली हैं जया जी..... उनकी पूरी फैमिली। तो सबसे पहले उन्होंने उस समय आने के लिए माफी मांगी और उसके बाद उन्होंने कहा कि अमित जी को इसी समय वो गीत चाहिए 'ऐ दिल-ए-नादान'....... तो मैंने उन्हें कहा कि माफ कीजिएगा कि इस समय तो वो गीत हमारे पास है नहीं, वो तो कमाल अमरोही साहब के लॉकर में पड़ा है..... कल हम बात करेंगे और अमिताभ जी को वो गीत पहुँचाएंगे।

चंद्राणी(हैरान होते हुए): तो ये तो बहुत इंट्रेस्टिंग बात बन गई... अरे वाह! आगे क्या हुआ !

खय्याम साहब(हँसते हुए): जी हाँ, तो अगले दिन हमने पूरा माजरा कमाल अमरोही साहब को बताया, तो वो बड़े खुश हुए। तो उन्होंने कहा कि ये तो छोटी सी बात है और अगले दिन मेरा बेटा प्रदीप खुद अमिताभ जी को 'ऐ दिल-ए-नादां' गीत देकर आया। देखिए ऐसा लिंक था मेरे जीवन में 'कभी-कभी' फिल्म का 'रजिया सुलतान' फिल्म से।

तो यह मात्र कल्पना ही की जा सकती है कि उस रात के बाद किसकी किससे क्या बात हुई होगी कि तीन दिन बाद यश चोपड़ा, साहिर साहब मेरी पत्नी जगजीत जी से बात कर रहे थे कि यश जी किसी शायर की ज़िंदगी पर एक फिल्म बना रहे हैं और यश जी और मैंने सोचा है कि उसका संगीत 'खय्याम' साहब ही देंगे।

चंद्राणी: हमने सुना है कि आपको बदनसीब भी माना जाता रहा है। ये बात कितनी सही है?

खय्याम साहब: बात तो बिलकुल सही है। यश जी ने एक दिन मुझे बताया कि मेरे बारे में तो यह भी कहा जाता था कि खय्याम जी अनलकी हैं क्योंकि इनके गीत चलते तो बहुत हैं पसंद भी किए जाते हैं किंतु इनकी फिल्में जुबली नहीं करतीं। तो देखिए इन हालातों में मुझे 'कभी-कभी' मिली। गीत बनाने के बाद हमने सब धार्मिक स्थलों पर माथा टेका और प्रार्थना की कि है प्रभु आप कुछ करें कि रिकॉर्ड बना जाए। और ईश्वर ने, अल्लाह ने, वाहेगुरु ने हमारी सुन ली और फिर सिल्वर क्या, गोल्डन क्या, डायमंड क्या, सब जुबलियाँ हो गईं।

तो एक तरह से कभी-कभी से ईश्वर ने अल्लाह ने, वाहेगुरु ने ऐसी बक्शिश की कि जुबली का दौर चल पड़ा। इससे पहले कभी जुबली नहीं हुई थी।

चंद्राणी: आजकल जो गाने बन रहे हैं उनके बारे में कुछ कहना चाहेंगे, क्या आप संतुष्ट हैं आज के संगीत से?

खय्याम साहब: आजकल जैसी फिल्में बन रही हैं वैसे ही गाने बन रहे हैं। आजकल के गानों के लिए मैं अपने युवाओं को दोष नहीं देना चाहता। पहले लंबी चलने वाली फिल्मों को सफलता का पैमाना माना जाता था किंतु आजकल किस फिल्म ने एक हफ्ते में, दो हफ्तों में कितना पैसा कमाया, इस बात को सफलता का पैमाना माना जाता है.... इसलिए इसमें संगीतकारों को या गायकों को दोष नहीं देना चाहता।

चंद्राणी: आपको कितने ही पुरस्कार मिल गए, पद्मभूषण, दादा साहब फाल्के अवार्ड, संगीत नाटक अकादमी अवार्ड, अन्य ढेरों पुरस्कार क्या अभी भी कुछ पाना बाकी रह गया है?

खय्याम साहब: जो हमने काम किया बहुत ही सराहा गया। जब पद्मभूषण मिला तो वहाँ लाइव दिखाया जाता है। मेरे बारे भी लिखा गया, मेरे बेटे प्रदीप ने बताया कि डैडी क्या आपने वो दो लाइनें पढ़ी थीं। मैंने कहा नहीं तो उसने बताया कि भारत सरकार ने लिखा था कि 'इनके बराबर का कोई है ही नहीं' तो बताओ बेटा इससे बड़ा अवार्ड क्या हो सकता है मेरे लिए।

जगजीत कौर: म्यूजिक का मयार भी कायम रखना और उसे पापुलर भी करना, हिट करना बहुत बड़ी बात हुआ करती है जो खय्याम साहब ने करके दिखा दिया।

चंद्राणी: आपकी धर्मपत्नी श्रीमती जगजीत कौर खुद भी एक अच्छी गायिका हैं और इनका एक गीत मैं आज तक याद करती हूँ शगुन फिल्म का 'तुम अपना रंज-ओ-गम... अपनी परेशानी मुझे दे दो संगीत के रूप में आपकी कितनी मददगार रही हैं।

जगजीत कौर: यदि इतने सालों बाद भी आप मेरा ये गीत याद करती हैं तो मुझे भगवान का शुक्रिया अदा करना चाहिए।

खय्याम साहब: कामयाबी की जहाँ तक बात है, आप जानती ही हैं कि हमारे संगीत की विशेषता यह रही कि ये कभी भी किसी से मिलता ही नहीं। इस कामयाबी में बहुत बड़ा हाथ मेरी धर्मपत्नी श्रीमती जगजीत कौर जी का है। हमारा साथ अब तो 50 वर्षों से भी अधिक का हो गया है। जब भी मैं संगीत बना रहा होता हूँ तो इनके कान लगे रहते हैं और जब इन्हें लगता है कि जहाँ उस्तादी ज्यादा ही हो गई है या फिर शास्त्रीय अधिक हो गया है तो ये खुद आती हैं, गाकर भी बताती हैं कि यहाँ ऐसा बनाइए..... ये संगीत हम आम जनता के लिए बना रहे हैं, उस्तादों के लिए नहीं। आम लोगों को समझ भी तो आना चाहिए।

चंद्राणी: क्या इस उम्र में भी आप संगीत बना रहे हैं? खय्याम: जी बिलकुल, अभी पीछे 2 गीत रिकॉर्ड भी हो गए थे लेकिन नियम व शर्तें अनुकूल न होने के कारण अभी फिल्मों में नहीं आए हैं। जब कभी आप उन गीतों को सुनेंगी तब भी आप किसी भी स्तर पर उन्हें पुराने गानों से कम नहीं पाएंगी।

चंद्राणी: अच्छा सर, हमें बहुत अच्छा लगा आपसे मिल कर। भगवान आपको और ताकत दे और हमें आगे भी आपका मधुर संगीत सुनने का अवसर मिलता रहे। बहुत बहुत धन्यवाद।

शाखा जुहू, मुंबई

डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के उपाय।

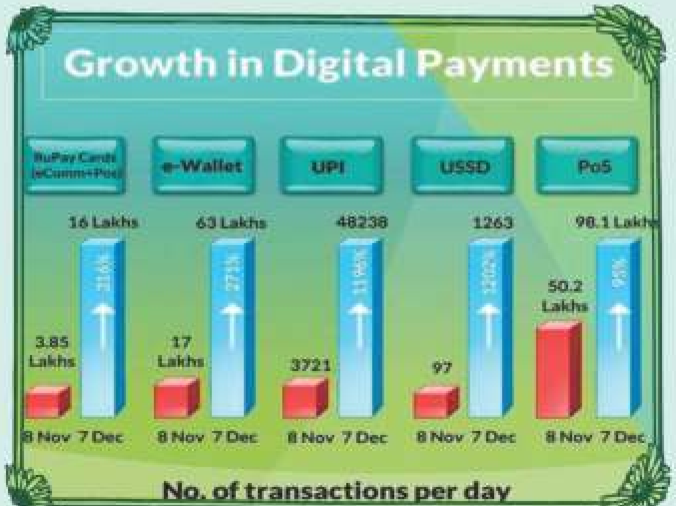

सौरभ शर्मा

क्या है डिजिटल भुगतान?

आज की इस रफ्तार भरी जिंदगी में प्रत्येक क्षण का महत्त्व होता है। इस भागदौड़ के बीच डिजिटल बैंकिंग ने ग्राहकों को बहुत राहत दी है। डिजिटल बैंकिंग के जरिए आप मिनटों में पैसे का भुगतान, लोन के लिए आवेदन व अन्य बैंकिंग सेवाएं घर बैठे प्राप्त कर सकते है।

डिजिटल भुगतान के माध्यम

डिजिटल भुगतान का अर्थ है सूचना एवं प्रौद्योगिकी की मदद से बैंक द्वारा ग्राहकों के पैसों का लेन-देन करना। सरल शब्दों में कहे तो डिजिटल भुगतान की तकनीक से आपका बैंक के साथ हमेशा जुड़ाव बना रहेगा। बैंक की शाखाओं में सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए बैंकों को कर्मचारी एवं अन्य संसाधनों पर काफी खर्च करना है। औसतन शाखा में हो रहे प्रति लेन-देन पर बैंक को 40 रूपये का खर्च लगता है। यदि यह लेन-देन आप ए.टी.एम से करते हैं तो यह लागत 18 से 20 रूपये हो जाती है। अगर यही लेन-देन डिजिटल माध्यम से हो तो लागत बहुत कम या ना के बराबर होती है। भारत सरकार ने 8 नवम्बर 2016 को 500 रूपए एवं 1000 रूपए की मुद्रा के अवमूल्यन की घोषणा कर दी। सरकार ने यह कदम काले धन एवं नकली मुद्रा द्वारा चलाई जा रही समानांतर अर्थव्यवस्था, जिसे मुख्य तौर पर अपराधियों एवं आतंकवादियों की फंडिंग के लिए प्रयोग किया जाता है, को समाप्त करने के लिए उठाया।। भारत सरकार के इस निर्णय से पूरे देश में लोगों को अपनी पुरानी मुद्रा बदलवाने के लिए कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परंतु अंत में यह कदम भारत में नकदीरहित अर्थव्यवस्था का आगाज करने में निर्णायक साबित हुआ। कैशलेस अर्थव्यवस्था ने अधिक से अधिक पारदर्शिता, लेन-देन में आसानी एवं सुविधा के मार्ग को प्रशस्त किया है। विमुद्रीकरण के कारण देशभर में डिजिटल भुगतानों एवं वैकल्पिक वितरण चैनलों के उपयोग में तीव्र वृद्धि हुई है।

डिजिटल तकनीकी के सहारे भुगतान करने के कई माध्यम हैं। इनमें प्रमुख हैं-

1. डेबिट कार्ड/क्रेडिट कार्ड
2. यू.एस.एस.डी. (USSD)
3. यू.पी.आई (UPI)
4. ए.ई.पी.एस (AEPS)
5. मोबाइल वॉलेट - पे.टी.एम, फ्रीचार्ज, मोबीकविक आदि
6. प्वाईंट ऑफ सेल (POS)
7. इंटरनेट बैंकिंग
8. मोबाइल बैंकिंग
9. बैंक प्रीपेड कार्ड
10. माइक्रो ए.टी.एम.

उपरोक्त डिजिटल तकनीकी से भुगतान करने के कई लाभ हैं। हमें ज्यादा मात्रा में नकदी रखने की जरूरत नहीं पड़ती। हम 24 घंटे डिजिटल लेन-देन कर सकते हैं यहाँ तक की छुट्टियों के दौरान भी। डिजिटल लेन-देन ने ई-कॉमर्स के लिए प्रशस्त कर दिया है। आप अपने घर में बैठकर किसी भी वस्तु की खरीदारी कर सकते हैं। जेब में नकदी रखने के मुकाबले डिजिटल भुगतान करना ज्यादा सुरक्षित भी है। इसमें नकली मुद्रा होने का तनाव भी नहीं रहता। डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से यदि कोई ग्राहक निवेश योजना लेता है तो बैंक अक्सर उस पर ज्यादा ब्याज उपलब्ध कराते हैं। इसका कारण यह है की डिजिटल बैंकिंग की लागत को कम कर देती है जिसका फायदा वे ग्राहक को देते हैं।

डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के लिए प्रयास एवं उपाय।

इस में कोई संदेह नहीं कि डिजिटल बैंकिंग से समय की बचत होती है। भारत सरकार डिजिटल माध्यमों के द्वारा भुगतान को बढ़ावा देने के लिए तरह-तरह के प्रयास कर रही है। नीति आयोग ने निजी उपभोग पर व्यय करने के लिए डिजिटल भुगतान माध्यमों का प्रयोग करने वाले व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं को नकद पुरस्कार देने के लिए लक्की ग्राहक योजना और डिजिटल धन व्यापार योजना की घोषणा की है। इस स्कीम का मुख्य लक्ष्य डिजिटल लेन-देन को प्रोत्साहित करना है जिससे की समाज के सभी वर्ग, विशेष रूप से गरीब एवं मध्यम वर्ग इलेक्ट्रॉनिक भुगतानों एवं वैकल्पिक वितरण चैनलों को अपना सकें। इसमें दो मुख्य घटक होंगे। एक उभोक्ताओं के लिए और दूसरा व्यापारियों के लिए।

(क) लक्की ग्राहक योजना (उपभोक्ताओं के लिए)

(i) 100 दिनों की अवधि के लिए 15000 लक्की ग्राहकों को हर रोज 1000 रूपये का इनाम दिया जाएगा।

(ii) एक लाख, दस हजार और पांच हजार रूपये के मूल्य के साप्ताहिक इनाम उन उपभोंक्ताओं को दिए जाएंगे जो डिजिटल भुगतानों के वैकल्पिक माध्यमों का उपयोग करते है।

(ख) डिजी-धन व्यापार योजना (व्यापारियों के लिए)

(I) व्यापारिक प्रतिष्ठानों में किए गए सभी डिजिटल लेनदेन के लिए व्यापारियों को इनाम दिया जाएगा।

(ii) 50,000/- रूपये, 5000/- रूपयें एवं 2500/- मूल्य के साप्ताहिक पुरस्कार दिये जाएंगे।

उपरोक्त योजनाओं के अलावा भारत सरकार ने डिजिटल भुगतान को प्रोत्साहित करने के लिए कई कदम उठाए हैं।

1. भारत सरकार ने अपने सभी मंत्रालय एवं विभागों को आदेश दिया है कि 5000/— रूपये से ज्यादा का भुगतान केवल डिजिटल माध्यमों के द्वारा किया जाए।
2. सरकार ने 2000/- रूपये तक के लेन-देन का भुगतान डेबिट कार्ड के द्वारा करने पर सर्विस टैक्स समाप्त कर दिया है।
3. इसी प्रकार पेट्रोल, डीजल खरीदने पर भुगतान यदि क्रेडिट कार्ड/डेबिट कार्ड, ईन्वॉलेट अथवा मोबाईल वॉलेट से किया जाता है तो 0.75% की छूट मिलेगी।
4. वेबसाइट के जरिये बीमा पॉलिसी खरीदने या प्रीमियम भुगतान ऑनलाइन करने पर 8% छूट दी जाएगी। इसी प्रकार साधारण बीमा पालिसी लेने या फिर प्रीमियम का भुगतान ऑनलाइन करने पर 10% की छूट दी जाएगी।
5. उपनगरीय रेलवे यात्रा का मासिक अथवा सीजन टिकट खरीदने पर एक जनवरी 2017 से 0.5 प्रतिशत की छूट दी जायेगी। रेल यात्रा का टिकट ऑनलाइन खरीदने पर 10 लाख रूपये का दुर्घटना बीमा दिया जाएगा।
6. हर 10,000 की आबादी वाले गाँव में दो प्वाइंट ऑफ सेल (पी ओ एस) मशीनें उपलब्ध कराई जाएंगी।
7. किसान क्रेडिट कार्ड धारकों को रूपे (Rupay) कार्ड उपलब्ध कराया जाएगा।
8. टोल नाकों पर डिजिटल भुगतान करने पर 10 प्रतिशत की छूट प्रदान की जाएगी।

आज भारत नकदीरहित अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है। अगर भारत को वाकई में नकदीरहित बनाना चाहते हैं तो हमें डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देना पड़ेगा। इसके लिए हमें विभिन्न चुनौतियों से निपटने का प्रयास करना होगा। भारत एक विशाल देश है एवं ऑनलाइन माध्यम से लेन-देन की सुविधा पूरे देश में उपलब्ध नहीं है। कई ए.टी.एम, डेबिट कार्ड का उपयोग केवल ए.टी.एम. से पैसा निकालने के लिए करते हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सूचना एवं प्रौद्योगिकी को जन-जन तक पहुँचाना एवं सिखाना जरूरी है। बैंकों को डिजिटल भुगतान की उपयोगिता का व्यापक प्रसार करने के लिए समय-समय पर सेमिनार एवं जागरूकता शिविर लगाने चाहिए।

डिजिटल भुगतान के माध्यम से लेन-देन करने से लोगों में नकदी पर आश्रित रहने की प्रवृत्ति में कमी आ रही है। यह हमारे देश के लिए ऐतिहासिक क्षण है अब हमारा देश पुरानी आदतों को छोड़ रहा है और नए माध्यमों को तीव्र गति से अपना रहा है। आइए हम सब इस महान कार्य में अपना योगदान देते हुए डिजिटल भुगतान एवं वैकल्पिक वितरण चैनलों को बढ़ावा दें।

आँचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा

समिति के संयोजक जी हुक्मदेव नारायण यादव जी का स्वागत करतीं शाखा की प्रभारी सुश्री मधुलिका चौहान। चित्र में महाप्रबंधक श्री वीरेन्द्र गुप्ता, आँचलिक प्रबंधक श्री बृजमोहन सिंह बक्शी तथा सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) भी दिखाई दे रहे हैं।

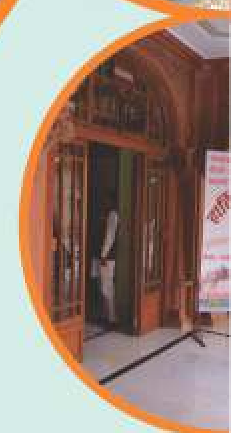

हमारे बैंक की बीकानेर शाखा का राजभाषा निरीक्षण

महामहिम राष्ट्रपति के आदेश, बैंक अधिकारियों को सौंपते हुए समिति के संयोजक श्री हुक्मदेव नारायण यादव व समिति के माननीय सदस्यगण।

बैंकिंग परिचालन में लाभप्रदता बढ़ाने में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान

इंदरपाल कौर

बैंकिंग परिचालन में लाभप्रदता बढ़ाने में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान अपने आप में बहुत ही सटीक विषय है।बैंक और लाभप्रदता का बहुत ही गहरा संबंध है। बैंक का अस्तित्व उसकी लाभप्रदता के कारण ही संभव होता है। अब मन में यह सवाल आता है कि हम हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं के साथ बैंक की लाभप्रदता कैसे बढ़ाएं? इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदी व हमारी क्षेत्रीय भाषाएं बहुत ही गरिमामय तथा अदबोआब की भाषाएं हैं।

हमारे बैंक का स्लोगन है: जहां सेवा ही जीवन ध्येय है।

बैंक रूपी जीवन की बात करें तो वह सांस रूपी ग्राहक से बनता है। इस संदर्भ में हम यह कह सकते हैं कि बैंक यदि ग्राहकों को अच्छी ग्राहक सेवा देंगे तो बैंकिंग उत्पाद बेचने में उन्हें मदद मिलेगी और यदि बैंकिंग उत्पाद अच्छे होंगे तो निश्चित रूप से बैंकों की लाभप्रदता बढ़ेगी। लेकिन कौन सी भाषा में ग्राहक सेवा दी जाए।

भाषा कैसी हो?

ऐसा मानना है कि जिस भाषा को बैंक का ग्राहक समझता है, वही भाषा मेरी होनी चाहिए। वही मेरी संपर्क भाषा होगी। वह हमें ग्राहकों से जोड़ती है।लेकिन क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग बैंक के बिज़नेस में बढ़ोतरी करेगा।

1. भाषा बेचने वाले की नहीं , बल्कि खरीदने वाले की होनी चाहिए तभी बैंक अपने प्रोडक्ट्स बेच पाएगा, तभी लाभ मिल पाएगा।
2. भारतीय परिवेश में ग्राहकों से जुड़ना है तो उनकी भाषा के माध्यम से ही जुड़ना होगा।
3. अच्छी भाषा बोलकर बैंकिंग उत्पादों को बेचना अर्थात् विपणन करना और लाभ कमाना।

ग्राहक सेवा धर्म हमारा, काम हमारी शान ,
विपणन होता है ग्राहक की नब्ज की पहचान।
भाषा की अपनी आन-बान है, और है अपनी शान

भारत वर्ष की प्रत्येक क्षेत्रीय भाषा की अपनी आन-बान और शान है, अपना स्वाभिमान है किंतु इन सब भाषाओं को जोड़ने वाली एक स्वर्णिम कड़ी है हिंदी। हमारी सभी भाषाएं आदरणीय हैं। अपने अपने प्रदेशों में भाषाएं पटरानी बनकर सम्मानित रहें, लेकिन उन भाषाओं के हार की मध्य मणि हिंदी ही होगी और हिंदी भारत भारती का सम्मान ग्रहण करेगी।

सभी भाषाओं में जो एक आत्मा है वह भारतीय आत्मा है।

हिंदी देश में विविधता में एकता है। आप भारत की सभी भाषाओं के स्वरूप को देखिए, वह अलग-अलग है। इनकी बोलने की प्रक्रिया अलग-अलग है, लेकिन सभी भाषाओं में जो एक आत्मा है वह भारतीय आत्मा है। उसमें एक ही सुगंध है, वह हमारे भारत की संस्कृति, सभ्यता और अस्मिता की है, इसलिए हम विविधता में एकता की एक सशक्त मिसाल बने हुए हैं। जनसामान्य हिंदी जानता है, हिंदी से प्रेम करता है और अपना काम चलाता है। जब वह कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक यात्रा करता है, चाहे वह किसी भी भाषा का भाषी हो, विभिन्न स्थानों में हिंदी में उसका काम चल जाता है।

इंडिया को भारत बनाना है।

हमारा प्रयास इंडिया को भारत बनाने का रहना चाहिए। जब हम इंडिया को भारत बनाने की बात करते हैं तो हम समग्रता में विश्वास करते हैं। हमारा एक प्रकार से सांझा चूल्हा है। सांझा इसलिए कि केरल में बैठा हुआ विद्वान हिंदी में बात करता है और तमिलनाडु में सब्जी बेचने वाला हिंदी को समझ लेता है।

भारतीय भाषाओं में बहुत समानता है।

भारत की क्षेत्रीय भाषाओं की उपस्थिति आज बर्मा, मलेशिया, इंडोनेशिया, त्रिनिदाद, सूडान तक की भाषाओं में दिखाई देती है। भारतीय भाषाओं के शब्द बड़े ही सहज रूप में हिंदी में चले जा रहे हैं। दक्षिण की भाषाओं, कन्नड़, तमिल, तेलगु, मलयालम के भजन यदि सुनें तो बहुत सारे शब्द यों ही मिल जाएंगे, जो हिंदी में बोले जाते हैं। कह सकते हैं कि भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में बहुत समानता है। उत्तर भारत, बंगाल, गुजरात और महाराष्ट्र तक की भाषाओं और हिंदी के शब्द भंडार में इतनी ज्यादा समानता है कि लोग उन्हें आसानी से समझ लेते हैं। चाहे किसी भी प्रदेश का कोई भी व्यक्ति देश के किसी भाग में चला जाए वह टूटी-फूटी हिंदी के माध्यम से भी अपनी बात दूसरे तक पहुँचाने में सफल हो जाता है।

उच्च कोटि की सेवा

बैंकिंग उद्योग एक सेवा उद्योग है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्राहकों को बैंक से संबंधित उच्च कोटि की सेवा मुहैया कराना है। यहां पर उच्च कोटि की सेवा का तात्पर्य बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली उन सेवाओं से है जिनसे ग्राहक प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। इन सेवाओं के प्रकार भिन्न-भिन्न हो सकते हैं लेकिन उनको प्रदान करने का माध्यम एक ही हो सकता है - वह है भाषा। ग्राहकों को अगर हम बैंकिंग से

जीत की इंतज़ार करना साधारण बात है
किंतु जीतने के लिए काम करना नायाब है।

संबंधित किसी भी प्रकार की सेवा उन्हीं की भाषा में मुहैया करा सकें तो ग्राहक की संतुष्टि को एक नया आयाम दिया जा सकता है।

प्रौद्योगिकी में भाषा

आज कम्प्यूटर के युग में बैंकिंग में विभिन्न भाषाओं को समाहित कर ग्राहकों को उन्हीं की भाषा में सुविधा उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती के रूप में उभरकर सामने आयी है। प्रौद्योगिकी ने बैंकिंग के कामकाज के तरीके का कायापलट तो किया ही है, ग्राहकों और बैंक के बीच के संचार के माध्यम को भी पूरी तरह से बदल दिया है। पहले जहां मौखिक एवं आमने-सामने से ग्राहकों से संपर्क किया जाता था, वहीं अब कंप्यूटर, मोबाइल आदि द्वारा परोक्ष रूप से ग्राहकों से संपर्क किया जा रहा है। बैंक में सीबीएस के आ जाने से भाषा के रोल में बदलाव तो आया ही है लेकिन इससे भाषा का महत्व कम नहीं हुआ है बल्कि और बढ़ गया है। कल तक हमारे पास ग्राहकों से संपर्क की भाषा के रूप में केवल दो ही विकल्प, हिंदी और अंग्रेजी, मौजूद थे लेकिन बैंकिंग में प्रौद्योगिकी एवं यूनिकोड के प्रचलन से संपर्क की भाषा के रूप में हिंदी-अंग्रेजी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं का विकल्प भी सामने आया है। इसी प्रकार मोबाइल में भी कई भाषाओं का विकल्प आ गया है जिससे ग्राहकों को किसी भी लेनदेन की सूचना उसके मोबाइल पर उन्ही की भाषा में भेजी जा सके। उसी प्रकार ही बैंक द्वारा ग्राहकों को भेजे गए ई-मेल या पत्र में भी हिंदी एवं अंग्रेजी के अलावा कई क्षेत्रीय भाषाओं को शामिल किया जा सकता है जिससे ग्राहक शाखा से जुड़ाव महसूस कर सके। आज प्रौद्योगिकी के आने से भाषा का महत्व निश्चित रूप से बढ़ा है। जरूरत इस बात की है कि हम ग्राहकों की भाषाई पसंद को पहचाने और प्रौद्योगिकी की मदद से उन्हें उनकी भाषा में सेवाएं प्रदान कर ग्राहक सेवा में आत्मीयता लाएं।

क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से बिजनेस पाना।

कभी हमें दक्षिण भारत में जाने का अवसर मिले तो हम पाएंगे कि यदि कोई पंजाबी वहां के मंदिरों, टूरिस्ट स्थानों पर, होटलों आदि में जाते हैं तो वहां उन्हें एस. एस. ए., नमस्कार की जाती है। पाजी बोलकर, संबोधित किया जाता हैं, पाजी की खाओगे आदि कहा जाता है। यह उदाहरण हमें सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि वह ऐसा क्यों कर रहे हैं। कारण स्पष्ट है कि पंजाबी भाषा के माध्यम से सामने वाला ग्राहक उनके पास आए और उन्हें बिजनेस मिले और वह लाभ कमा सके। साउथ में पंजाबी ढाबे/होटल अक्सर मिलते हैं ताकि उनकी प्रोफिटेबिलिटी बढ़े। हमें उन बातों से बहुत बढ़ी सीख मिलती है कि अगर हम बैंक वालों को बैंक की लाभप्रदता बढ़ानी है तो हमें क्षेत्रीय भाषाओं और ग्राहक की भाषा को बढ़ावा देना होगा।

मन में एक ख्याल यह भी आता है कि अगर हम किसी को एक मछली खाने को देते हैं तो समझो कि हम उसके एक दिन के भोजन की व्यवस्था कर रहे हैं और इसके साथ ही यदि हम उस व्यक्ति को मत्स्य पालन का प्रशिक्षण देते हैं तो समझो कि हम उसके आजीवन भोजन की व्यवस्था कर देते हैं। ठीक उसी प्रकार हम अपने स्टाफ को ग्राहक से साथ ही एक बार उसकी भाषा में बात करने की बजाय ग्राहक की नब्ज को पहचानते हुए उसके साथ निरंतर हिंदी अथवा उसकी अपनी भाषा में करने की बात करते हैं तो निश्चित रूप से इसका सीधा असर बैंक की लाभप्रदता पर पड़ेगा।

ग्राहकों से अच्छे संबंध बनाना।

बैंक की लाभप्रदता बढ़ाने में हमारी भाषा, हमारी शैली, हमारे द्वारा प्रयोग में लाए जा रहे शब्दों की बहुत बड़ी भूमिका होती है। ग्राहकों के साथ उनकी भाषा में अच्छे और दीर्घकालीन संबंध बनाए रखने के लिए यह बात जहन में आनी चाहिए कि खास अवसरों पर उन्हें उनकी भाषा में बैंक की ओर से याद करना। ऐसा करने से ग्राहक के साथ एक प्रकार से पारिवारिक माहौल बनता है, अपनत्व की भावना आती है, रिश्तों में प्रगाढ़ता आती है और ग्राहक सदा बैंक का ही हो कर रह जाता है।

ग्राहक संतुष्टि व आत्मीयता द्वारा लाभप्रदता।

हम सब इस बात से तो परिचित हैं ही कि बैंकिंग एक सेवा क्षेत्र है और किसी सेवा क्षेत्र की सफलता और उसका विकास उसके ग्राहकों की संतुष्टि पर निर्भर करता है।बेहतर ग्राहक सेवा की पहली कड़ी है कि ग्राहक से अच्छी तरह बात करना, जिसमें भाषा एक अहम भूमिका अदा करती है।बैंकों की लाभप्रदता बढ़ाने में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के योगदान का जिक्र आते ही बचपन में पढ़ा हुआ वाक्य "जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठि" जहन में आ जाता है।

ग्राहक ही बैंकिंग व्यवसाय की धुरी होता है। ग्राहक को समझना, उसके महत्व को समझना, उसकी वित्तीय जरूरतों को समझने के साथ-साथ उसकी भाषा को समझना अत्यंत आवश्यक है।गांधी जी के विचारों के अनुसार ''हम ग्राहक पर निर्भर हैं, वह तो हमारे कार्य का उद्देश्य है, वह हमारे व्यवसाय का अंग है, वह हमें अपनी सेवा का अवसर देकर हम पर अपना अहसान कर रहा होता है''।

ग्राहक को प्रसन्न रखना बेहद जरूरी है और उसके लिए उसकी अपनी भाषाओं में बैंकिंग सुविधाएं दी जानी अपेक्षित है। कोई भी बैंक जो ग्राहक को आदर, सत्कारपूर्वक, सौहार्दपूर्ण, मधुर व्यवहार से, उसकी अपनी भाषा में सेवा प्रदान करें तो समझ लीजिए वह दीर्घजीवी हो सकता है।जिस बैंक के ग्राहक उस पर मेहरबान हैं उसे बाजार की

'आपका दिन शुभ रहे' के स्थान पर 'हम आज दिन शुभ बनाएं' अधिक महत्वपूण है।

किन्हीं भी विकट परिस्थितियों में लड़खड़ाना नहीं पड़ता। बैंक अपने मूल्यवान ग्राहकों के साथ उनकी भाषा में उनका मन जीतने का प्रयास करे। इसमें बैंक के कारोबार में असीमित वृद्धि की संभावनाएं निहित हैं,सभी बैंक अपनी-अपनी लाभप्रदता में वृद्धि कर सकते हैं।

ग्राहक हमेशा अपना हित और लाभ चाहता है। बैंक कर्मचारियों को अपने प्रत्येक उत्पाद की पूर्ण एवं सही जानकारी होनी चाहिए। अपने ग्राहक को अपना उत्पाद बेचते समय बैंक कर्मचारियों को बैंक के लाभ के साथ-साथ ग्राहक के लाभ की भी बात करनी चाहिए।इस प्रकार ग्राहक को अधिक संतुष्टि होगी और वह बैंक के साथ आत्मीयता महसूस करेगा।

वित्तीय समावेशन

वित्तीय समावेशन का लक्ष्य देश के दूरदराज के क्षेत्रों के जनसाधारण जो कि बैंकिंग सुविधाओं से वंचित हैं, उन्हें उन के घर पर ही कम लागत पर वित्तीय सुविधाएं उपलब्ध करवाना है।ये वो लोग हैं जो समाज के निम्नवर्ग से हैं और अधिक पढ़े-लिखे नहीं हैं। अतः उन्हें बैंकिंग सुविधाओं का ज्ञान उनकी अपनी भाषा में ही दिया जाए तो वे इन सुविधाओं को भली प्रकार समझने में सक्षम होंगे और बैंकों से जुड़ कर अपनी बचत के पैसे बैंक में जमा कर ब्याज के रूप में लाभ अर्जित कर सकेंगे और साथ ही छोटे-मोटे काम-धंधे के लिए ऋण लेकर अपनी आजीविका कमाने में सक्षम होंगे।

बैंकिंग को जनता से जोड़ने में हिंदी की अहम भूमिका है।बैंक की योजनाओं और सामाजिक कल्याण की नीतियों के लिए उन्हें जनता तक उनकी भाषाओं में पहुँचाया जाना जरूरी है। इनका लाभ आम लोगों तक पहुँचाने के लिए हमें हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग इस प्रकार से करना होगा कि आम आदमी तक विकास तथा कल्याण योजनाओं की जानकारी सरलता से और हूबहू पहुँच सके।

हिंदी ने अपने महत्व, उपयोगिता और लोकप्रियता के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाई है। विश्व के सभी देश अपना राष्ट्रीय कामकाज अपनी अपनी भाषाओं में करते हैं। रूस, जापान, फ्रांस, इज़राइल जैसे देशों ने अपनी-अपनी भाषाओं में देश का कामकाज करके असाधारण प्रगति हासिल की है। आज अशिक्षा, बेरोजगारी तथा गरीबी से उभरने के लिए आम जनता तक सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, कृषि आदि क्षेत्रों में हिंदी भाषा के माध्यम से शिक्षित और जागरूक करने की आवश्यकता है। हिंदी का अन्य क्षेत्रीय भाषाओं से किसी प्रकार का न तो कोई विरोध है और न ही कोई प्रतिद्वंदिता क्योंकि मूलतः सभी क्षेत्रीय भाषाएं भारत की संस्कृति की मिट्टी से उत्पन्न हुई हैं और अपनी-अपनी भूमिका का भली प्रकार से निर्वाह कर रहीं हैं।

अनेक बहुराष्ट्रीय और भारतीय कंपनियों ने भी इस बात को स्वीकार कर लिया है कि इंटरनेट, मोबाइल फोन पर हिंदी का प्रयोग करने वाले लोगों की तादाद बहुत ज्यादा है।

समाज के संपूर्ण वित्तीय समावेशन के लिए बैंकिंग में हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग को नकारा नहीं जा सकता। प्रधानमंत्री जनधन योजना की सफलता की अगर बात करें तो इसमें बैंकों द्वारा ग्राहकों की ही भाषा में, उन तक पहुँचने का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

बैंक किसके लिए काम करते हैं?

यह बात सच है कि बैंक लाभप्रदता के लिए काम करते हैं। लाभप्रदता के लिए बैंकों के पास ग्राहकों का होना जरूरी है और उन्हें वह बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान कर लाभ कमा सकते हैं और वह ग्राहक सेवा ग्राहकों के दिल से और दिमाग से जुड़ी भाषा में हो तो सोने-पे-सुहागा वाली बात होगी। ग्राहकों द्वारा बैंकिंग समझने में हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाएं एक सेतू के रूप में काम कर सकती हैं।

यह सरकार तथा बैंकिंग क्षेत्र की जिम्मेदारी है कि ऐसे लोगों को जिनके पास पैसा तो है परंतु औपचारिक बैंकिंग चैनल उनकी पहुँच में नहीं है, उन्हें उनके द्वारा समझी जाने वाली भाषा में बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करें। लोगों द्वारा समझी जाने वाली भाषाओं में वित्तीय साक्षरता की व्यवस्था करने की आवश्यकता है। हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाएं, बैंकर तथा ग्राहक के बीच सेतू का काम कर सकती हैं।

एडवांस प्रौद्योगिकी के इस युग में, हैकिंग से संबंधित मुद्दों का बहुत बड़ा खतरा है। यह हमारी जिम्मेदारी बन जाती है कि साइबर सुरक्षा और प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए उठाए जाने वाले कदमों के बारे में ग्राहकों को जागरूक किया जाए। हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाएं इस जिम्मेदारी को पूरा करने में मददगार हो सकती हैं।

बैंकों के लिए ग्राहक ही सर्वश्रेष्ठ है एवं ग्राहक ही लाभ है जैसी अवधारणाओं को प्रत्येक बैंक कर्मचारी के मन में मजबूत करना होगा। अंत में हम यह कह सकते हैं कि उत्तम ग्राहक सेवा व ग्राहक की भाषा द्वारा बैंकिंग उद्योग में लाभप्रदता निश्चित है।

आँचलिक कार्यालय चंडीगढ़

जो दूसरों का दर्द समझते हैं, कभी किसी की दर्द की वजह नहीं बनते।

वित्त मंत्रालय वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा राजभाषा निरीक्षण

वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री शैलेश कुमार जी द्वारा हमारे स्टाफ प्रशिक्षण कॉलेज, रोहिणी व आँचलिक कार्यालय नौएडा का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किए गए। निरीक्षण के उपरांत दोनों ही कार्यालयों में विशेष संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण केंद्र में 'बैंकिंग परिचालन के क्षेत्र में प्रभावी राजभाषा कार्यान्वयन' तथा आंचलिक कार्यालय, नौएडा में 'वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य में राजभाषा कार्यान्वयन तथा ग्राहक सेवा'। चित्र 1 में श्री शैलेश कुमार सिंह सहभागियों को प्रेरित कर रहे हैं। और मंच पर विराजमान हैं दाएं से बाएं श्री राजीव रावतः उप महाप्रबंधक, श्री वीरेंद्र गुप्ताः महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री सुभाष क्वात्राः महाप्रबंधक (मानव संसाधन विकास विभाग) तथा श्री राजेंद्र कुमारः प्रधानाचार्य स्टाफ प्रशिक्षण कॉलेज रोहिणी। चित्र 2 में श्री शैलेश कुमार जी, श्री बलदेव राजः आँचलिक प्रबंधक(नौएडा), श्री राजिंदर सिंह बेवलीः सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा) तथा अन्य अधिकारी गण।

वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग के संयुक्त निदेशक(राजभाषा) श्री शैलेश कुमार सिंह द्वारा नत्थुसर रोड, बीकानेर शाखा का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया। और निरीक्षण के उपरांत हिंदी कार्यशाला के माध्यम से स्टाफ सदस्यों को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा शाखा के निरीक्षण के समय दिए गए दिशा-निर्देशों से अवगत भी करवाया गया। शाखा की वरिष्ठ प्रबंधक सुश्री मधुलिका चौहान ने निरीक्षण कार्य संपन्न करवाया तथा इस अवसर पर प्रधान कार्यालय के सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली भी विशेष रूप से उपस्थित रहे ।

राजभाषा शील्ड

भा.रि. बैंक भोपाल के क्षेत्रीय निदेशक श्री अजय मिचयारी नराकास भोपाल अध्यक्ष श्री अजय व्यास तथा गृह-मंत्रालय(रा.वि.) के सहायक निदेशक व कार्यालयक्ष्यक्ष श्री हरीश सिंह चौहान आँचलिक प्रबंधक भोपाल श्री पंकज द्विवेदी व राजभाषा प्रबंधक श्री देवेंद्र कुमार को नराकास भोपाल की राजभाषा शील्ड व प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए।

चंडीगढ़ बैंक नराकास द्वारा आँचलिक कार्यालय चंडीगढ़ को ई. पत्रिका प्रकाशन के लिए तृतीय पुरस्कार।

आंगन

रिंकी कुमारी

पहले मेरा आंगन बहुत बड़ा था
जिसके बीच में एक हरा-भरा
नीम का पेड़ खड़ा था।
जिसके छांव में मैं और मेरा
भाई खेलते थे कभी-कभी झूलते थे।
वह पेड़ सूख गया था।
जड़ से टूट गया था।
मुझे अपने बड़े आंगन पर बहुत गर्व था
क्योंकि वैसा आंगन किसी और के घर नही था।
कुछ दिनों से मैं और मेरा छोटा भाई अलग-अलग कमरों में रहते थे,
खाते-पीते भी अलग-अलग थे
पर सुख -दुख साथ-साथ सहते थे
एक दिन बच्चों में हो गई छिना झपटी
जिससे पत्नियों की आपस में तकरार बढ़ी
उसी दिन से उन दोनों ने आंगन के बीच में
एक काल्पनिक दिवार कर दी खड़ी
यह काल्पनिक दिवार बहुत मजबूत थी
कल्पना का जीता-जागता सबूत थी
बाहर वालों के लिए आंगन अभी उतना ही बड़ा था
पर हम जानते थे आंगन के बीच में कुछ दिवार सा खड़ा था।
कुछ रोज से हमारे आंगन की आवाज
दूसरों के आंगन में जा रही थी
दूरियाँ हम भाइयों में भी नजर आ रही थी
पर मैं सर उठाये खड़ा था
मेरा आंगन गाँव में अभी भी सबसे बड़ा था
एक दिन पत्नियों की आपस में और तकरार बढ़ी
मैं नही जानता भाई की पत्नी क्या चाहती थी
पर मेरी पत्नी अक्सर देवर के लिए कहती थी।
मेरी पत्नी ने कुछ बात कर दी कड़ी
भाई ने पत्नी को थप्पड़ मार दिया
और मेरी सहनशीलता को गालियों से भी आगे बढ़ा दिया
बस! उसी दिन मेरा भाई से मन उलट गया
शाम को आंगन बंट गया
सुबह तक आंगन के बीच में
एक नफरत की दीवार खड़ी थी
जो और दीवारों से ऊँची बन पड़ी थी
मेरा आंगन दीवारों में
सिमट कर गुमसुम पड़ा था
आंगन को देखकर मैं सर झुकाये खड़ा था।।

प्रधान कार्यालय
धोखाधड़ी निगरानी विभाग

काव्य

मंजिल

वैभव मिश्र

न थककर हार मुसाफिर तू यूँ
मंजिलों को पाने में,
उठकर गिरना-गिरकर उठना
यह रीति पुरानी है जीवन में,
गर हवा विपरीत हो तो
बढ़ना अडिग होगा उससे,
गर राह में कांटे हो तो,
सीखना तुम फूलों से,
न थककर हार मुसाफिर तू यूँ
मंज़िलो को पाने में,
गर असफलता का साया हो
तेरे मन में जो आया हो,
मन से निकाल फेंक तू उसको
जो रोके कदमों-कदम तुझको,
न थककर हार मुसाफिर तू यूँ
मंजिलों को पाने में,
गर मुश्किलें ही मुश्किलें हों
मंजिलों को पाने में,
तू मुश्किल की भी बन जा मुश्किल
आए न दोबारा राहों में,
न थककर हार मुसाफिर तू यूँ
मंजिलो को पाने में,
थकना तेरी शान नहीं
जो थक गया इंसान नहीं,
चल चला चल चलता जा तू
संघर्षों से भिड़ता जा तू,
न थककर हार मुसाफिर तू यूँ
मंजिलों को पाने में,
तुझमें क्या इतनी शक्ति नहीं?
मुझमें क्या इतनी भक्ति नहीं?
जो अपने मन में ठानी है,
वह पूरी करके दिखानी है।
न थककर हार मुसाफिर तू यूँ
मंजीलों को पाने में,
एक बार तो पूछ जरा खुद से
क्या हारा तू खुद से,
गर तू हार गया खुद से
लड़ेगा क्या फिर दुनिया से,
न थककर हार मुसाफिर तू यूँ
मंज़िलों को पाने में,

आंचलिक कार्यालय, बरेली

मंजूषा

हर बात जीतना ज़रूरी तो नहीं

एकता

टूटी हूँ अक्सर, कभी छन्न करके
तो कभी, यूँ ही बे-आवाज़
टुकड़े कुछ बड़े, कुछ छोटे,
बिखरे यहाँ वहाँ, कुछ दूर..कुछ पास
सिसकियां दबी दबी सीं,
शायद सुनाई नहीं दीं किसी को, या शायद न सुनना ही था
सुनकर अनसुना करना उन अपनों को
समेटकर हर बार आहत से
उन टुकड़ों को
सहलाया है....बहलाया है,
फिर सब टुकड़े सहेज कर,
खुद ही, खुद को बनाया है।
फिर से टूटने के लिए.....कभी टूट कर बिखरी...
कभी बस वहीं ढह गई
उस मिट्टी की दीवार की तरह.....
जो सह न सकी बोझ कभी अपेक्षाओं का....
कभी उपेक्षाओं का
पर मिट्टी है ना, फिर खड़ी कर दी जाती है
हर बार कुछ नए संस्कारों... कुछ नए अधिकारों का
चूना मिलाकर, बस इतना कि
संस्कार मेरे.... अधिकार उनके
कभी-कभी जब मिट्टी नहीं,
पत्थर सी होती हूँ मैं..
कुछ हिस्से टूट कर, टुकड़े नहीं होते,
बस चूर होकर उड़ जाते हैं...
जोड़ने पर सिर्फ जोड़ नहीं दिखते....
कुछ दरारें भी रह जाती हैं क्योंकि...
कुछ था मुझमें जो अब रहा ही नहीं
भर देती हूँ वो दरारें भी बहलाकर...
कुछ किस्से...कुछ कहानियां
कुछ नियम और कुछ मीठे झूठ सुनाकर
टूट कर जुड़ना हर बार जरूरी तो नहीं
ये कैसा वरदान है या छिपा अभिशाप है कोई
जैसे हो न खत्म होने वाला कोई चक्र
टूटना, बिखरना, समेटना, और फिर बनना
क्यों न इस बार रह जाएं फिर टूटकर?
न फिक्र समेट कर बनने की
न फिर टूटने का दर्द कोई
टूटी इमारतों की भी तो, कहानी होती है,
दास्तां तो टुकड़ों में भी मिल जाएगी
हर बार जीतना खुद से जरूरी तो नहीं
कुछ हारें भी हैं ज़िंदा रहने को जरूरी।

भारतीय स्टेट बैंक, चंडीगढ़

देश के साधु, देश के नेता

सलीम खान

साधु रहे न संत, इंसान रहे ना नेता,
षड्यंत्रों के रंगमंच में बाबा बने अभिनेता।
न गीता न रामायण न पंथ कोई है आता
चीरहरण, हत्याओं से रहता इनका नाता।।
साधू जैसा रूप, हैवान हुए है नेता,
बढ़ जाएगी अराजकता,
इंसान अगर अब भी न चेता।
हिंसा और आतंकवाद फैलाकर
उपदेश देते है शांति का,
न्याय के दरवाजे से हुआ पटाक्षेप इस भ्रांति का।
आस्था को कुचला, धर्म को मारा,
अब और सहा न जाएगा।
कैसा धर्म है, कैसी नैतिकता,
क्या कोई बतलाएगा।
संस्कृति और धर्म की देते दुहाई देश के नेता,
वोटों की आंखों पर पट्टी बांधे
और न इनको कुछ दिखाई देता।
अरे कोई तो समझाओ इनको,
इनको न कुछ आता जाता,
इंसानियत से बड़ा न कोई धर्म और न है कोई नाता।

शाखा अस्ति वसूली

रस्म अदायगी

सोहन सिंह कालड़ा

यह बात पीपल और शीशम के पेड़ के बीच हो रही है। "यार सुनता हूँ पीपल और शीशम के पेड़ की पूजा होती है, मैं शुद्ध हवा देता हूँ, मेरे पत्ते बहुत काम आते हैं, मैं एक पवित्र पेड़ हूँ, मुझ में देवताओं का वास होता है" यार शीशम मुझे तो ऐसा कभी महसूस नहीं हुआ"

"यार पीपल मुझे भी सुनने में आया है कि मेरी लकड़ी बहुत मजबूत होती है इसका फर्नीचर बहुत बढ़िया बनता है, मुझे बहुत अच्छा समझा जाता है, मेरे पत्ते लाल हो चुकें हैं, आज कोई मुझे काटने नहीं आया, मेरे पास आकर कोई दस मिनट भी नहीं रुकता।

"यार शीशम हम बहुत अभावग्रस्त है, यहाँ शमशान घाट में क्यों उग गए हमारा क्या कसूर है, हम तो यहाँ उगना नहीं चाहते थे, यहाँ उगने से बेहतर तो मर ही जाते।"

"दिल छोटा नहीं करते, हम दोनों पड़ोसी हैं, दुख-सुख के भागीदार हैं, तुम तो यार हटकर खड़े हो, मेरे तो बग़ल में ही चबूतरा है, यहाँ पर लगभग हर रोज तीन से चार लाशों को जलाने से पहले रख कर रस्में करतें हैं घड़े फोड़ते हैं, मैं हर दिन यही देखता हूँ, उदास हो जाता हूँ, कभी-कभी बहुत ज़्यादा" "क्या करूँ, मैं यहाँ से हिल नहीं सकता" कुछ लोग तो लाश के आने का इन्तज़ार करते हैं, बातों में मरने वाले को याद करते हैं" कुछ चुप रहते हैं, उदास, लाश के संस्कार के बाद जल्दी जल्दी बाहर जातें हैं अलग अलाप करते हुए"

"पीपल यार मैं भी देखता हूँ यहाँ सब कुछ, क्या करें जीवन ही ऐसा मिला, आज शायद कोई लाश नहीं आएगी। कल तो यार हद हो गयी, मैंने सुना किसी सरकारी बाबू की पत्नी की लाश आने वाली थी

बहुत से लोग सरकारी बाबू के दोस्त, रिश्तेदार संबंधी, गर्मी पूरे शिखर पर और संस्कार का समय बारह बजे था, एक बज गया, लोग तिलमिला रहे थे, कुछ लोग मेरे नीचे खड़े हो गये मैं खुश था कि मैं भी आज किसी के काम आ गया, किंतु वह बातें करने लगे तो मेरी खुशी ग़ायब हो गयी, क्या कह रहे थे, पीपल भाई सुनो",

"यार एक बज गया कब लाएंगे डेड बॉडी, यार साली इतनी गर्मी में क्यों मरी, यार इसको शाम को जलाते, पूछो यार कब आएंगे, मोबाईल करो, यार बच्चों को स्कूल से लाना है, एक बोला-आधा घंटा लगेगा, छोटी बहन अभी पहुँचने वाली है, अबे आधा घंटा तो यहाँ रस्मों में लग जाएगा, छोड़ो यार पसीने से बदबू आ रही है, अच्छा यार यह बताओ डीसीपी की बीवी का शव कब आ रहा है? यार प्यास लग रही हैं, यहाँ कहाँ पानी मिलेगा? मरने वाली तो मर गयी और हम गर्मी से मर रहे हैं, यार छोड़ो। शाम को बैठेंगे, बहुत देर हो गयी बैठे हुए, यार बहुत गर्मी है, तेरे लिए ए. सी. लगवाते हैं, बैठने के लिए सोफ़ा"

कुछ लोग मोबाईल पर आए जोक पर ठहाके लगा रहे थे, बहुत लोग कानों में मोबाईल लगाए बातों में व्यस्त थे"

अरे डैड बॉडी आ गई, सभी नकली उदासी के साथ" हाथ जोड़ कर खड़े हो गये।

"पीपल यार, उदास तो मैं हर रोज होता हूँ किन्तु आज तो मेरी उदासी और उदास हो गयी, हम चल नहीं सकते यहीं खड़े हैं हम तो उदास होते इन रस्म अदायगी करते हुए लोगों को केवल देख-सुन सकते हैं। अच्छा है! हम इंसान नहीं हैं।

पूर्व उप महाप्रबंधक

लोगों की बुराइयों में अच्छाई ढूंढना शुरू करें, वे अच्छे होने शुरू हो जाएंगे।

प्रधान कार्यालय स्तरीय अंतर्विभागीय राजभाषा शील्ड

प्रधान कार्यालय स्तर पर
राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता पुरस्कार, बैंक के अध्यक्ष
एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरबीर सिंह जी के कर
कमलों द्वारा प्रदान किए गए। मंच पर कार्यकारी निदेशक
श्री फरीद अहमद जी, श्री गोविंद डोंग्रे जी तथा महाप्रबंधक गण शोभायमान थे।

प्रधान कार्यालय अनुपालन विभाग पुरस्कार प्राप्त करते हुए उपमहाप्रबंधक श्री विनय कुमार मेहरोत्रा तथा मुख्य प्रबंधक एस. के रावत।

प्रधान कार्यालय अग्रिम विभाग पुरस्कार प्राप्त करते हुए महाप्रबंधक श्री वीरेन्द्र गुप्ता तथा सहायक महाप्रबंधक श्री इन्द्रमोहन क्वात्रा।

प्रधान कार्यालय, सामान्य प्रशासन विभाग पुरस्कार प्राप्त करते हुए महाप्रबंधक श्री एस.सी.क्वात्रा तथा उपमहाप्रबंधक कर्नल भूपराज सिंह।

प्रधान कार्यालय, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग पुरस्कार प्राप्त करती हुई महाप्रबंधक सुश्री हरविंदर सचदेव, सहायक महाप्रबंधक श्री एस.वी.एम. कृष्णाराव तथा विभाग के अन्य उच्चाधिकारी गण।

ऐतिहासिक क्षण

भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी के कर-क
(आई.ए.एस) द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कार की प्रथम शील्ड प्र
दौरान 'क' क्षेत्र में राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए रा
2017 को विज्ञान भवन में प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण स
प्रबंधक(राजभाषा) श्री वीरेंद्र गुप्ता तथा सहायक महाप्रबंधक(राज

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

मलों द्वारा बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिंदरबीर सिंह
ाप्त की गई। यह प्रथम पुरस्कार हमारे बैंक को वर्ष 2016–17 के
ष्ट्रीयकृत बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं की श्रेणी के अंतर्गत 14 सितंबर
समारोह के दौरान बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री फरीद अहमद, महा
भाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली भी उपस्थित थे।

हिंदी/पंजाबी कार्यशाला

आँचलिक कार्यालय, होशियारपुर

आँचलिक कार्यालय, पटियाला

आँचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

आँचलिक कार्यालय, हरियाणा

आँचलिक कार्यालय, गाँधीनगर

आँचलिक कार्यालय, बरेली

पर्यावरण की महत्ता

श्रीमती शिखाश्री

सांसों को भी मिलता नहीं
शुद्ध हवा का झोंका
जाने कौन कर रहा
किसके साथ धोखा

जी हाँ सही पढ़ा आपने। यह एक प्रश्न है जो बदलते परिदृश्य में और भी महत्वपूर्ण हो गया है। पूरे विश्व में समान रूप से मनाए जाने वाले विश्व पर्यावरण दिवस को हम उत्सव कहें, दिवस कहें या फिर पुण्यतिथि...। जीवन की दिनचर्या में हम कुछ तो भूल रहे हैं। और ये 'कुछ' हमें तब याद आता है जब अचानक से हमें अपने वातानुकुलित माहौल से बाहर निकलना पड़ता है और हमारा सामना होता है तेजी से बदलते वातावरण से। इसके लिए जिम्मेदार कौन है, आप? नहीं या मैं? नहीं-नहीं तो पड़ोसी देश? हाँ ये कह सकते हैं क्योंकि वो यहां तर्क करने नहीं आएंगे। और मेरी बात मानिए सारी दुनियां यही सोच कर खुश है कि इसके लिए जिम्मेदार वो खुद नहीं बल्कि उनके पड़ोसी देश हैं। तो फिर इसका हल कैसे निकलेगा? इसके लिए हमें सतत् विकास की प्रक्रिया अपनानी पड़ेगी। आर्थिक विकास जो प्राकृतिक संसाधनों की कमी के बिना किया जाता है उसे हम सतत् विकास कहते हैं। हमारी पर्यावरणीय सीमाओं के भीतर रहना स्थायी विकास के केंद्रीय सिद्धांतों में से एक है। ऐसा नहीं करने का एक प्रभाव जलवायु परिवर्तन है। सतत् विकास की अवधारणा को कई अलग-अलग तरीकों से समझाया जा सकता है, परन्तु इसका मूल उद्देश्य पर्यावरण को बचाना तथा मानव जाति के भविष्य को सुनिश्चित करना है।

विश्व पर्यावरण दिवस

"पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पर सन् 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्टॉकहोम (स्वीडन) में विश्व भर के देशों का पहला पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया। इसमें 119 देशों ने भाग लिया और पहली बार एक ही पृथ्वी का सिद्धांत मान्य किया। इसी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) का जन्म हुआ तथा प्रति वर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस आयोजित करके नागरिकों को प्रदूषण की समस्या से अवगत कराने का निश्चय किया गया।" तथा इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाते हुए राजनीतिक चेतना जागृत करना और आम जनता को प्रेरित करना था। उक्त सम्मेलन में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने "पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति एवं उसका विश्व के भविष्य पर प्रभाव" विषय पर व्याख्यान दिया था। पर्यावरण-सुरक्षा की दिशा में यह भारत का प्रारंभिक कदम था। तभी से हम प्रति वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाते आ रहे हैं।

पर्यावरण में प्रदूषण के कारकः वातावरण प्रदूषित होने के कई कारण हैं। बहुत बार ऐसा होता है कि हम अपने वातावरण को अशुद्ध कर रहे होते हैं पर हमें पता ही नहीं होता कि ये प्रदूषण के अंतर्गत आता है।

1. **जल प्रदूषणः** औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप आज कारखानों की संख्या में वृद्धि हुई है लेकिन इन कारखानों को लगाने से पूर्व इनके अवशिष्ट पदार्थों को नदियों, नहरों, तालाबों आदि किसी अन्य स्रोतों में बहा दिया जाता है जिससे जल में रहने वाले जीव-जन्तुओं व पौधों पर तो बुरा प्रभाव पड़ता ही है साथ ही जल पीने योग्य नहीं रहता और प्रदूषित हो जाता है। जनसंख्या वृद्धि से मलमूत्र हटाने की एक गम्भीर समस्या का समाधान नासमझी में यह किया गया कि मल-मूत्र को आज नदियों व नहरों आदि में बहा दिया जाता है, यही मूत्र व मल हमारे जल स्रोतों को दूषित कर रहे हैं। जब जल में परमाणु परीक्षण किये जाते हैं तो जल में इनके नाभिकीय कण मिल जाते हैं और ये जल को दूषित करते हैं। गाँव में लोगों के तालाबों, नहरों में नहाने, कपड़े धोने, पशुओं को नहलाने बर्तन साफ करने आदि से भी ये जल स्रोत दूषित होते हैं। कुछ नगरों में जो कि नदी के किनारे बसे हैं वहाँ पर व्यक्ति के मरने के बाद उसका शव पानी में बहा दिया जाता है। उस शव के सड़ने व गलने से पानी में जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि होती है, जल सड़ाँध देता है और जल प्रदूषित होता है।

2. **वायु प्रदूषणः** विश्व की बढ़ती जनसंख्या ने प्राकृतिक साधनों का अधिक उपयोग किया है हमने अपने जीवन को आरामदायक बनाने के लिए वर्षा होने में सहायक, हवादार, छायादार और हरे-भरे वृक्षों की कटाई कर डाली। जंगल जला डाले। नतीजा अनियमित वर्षा और तपती धरती के रूप में हमारे सामने है। हरे-भरे जंगलों को इंडस्ट्री में तबदील कर हम स्वच्छंद प्राणवायु लेने के भी हकदार नहीं रहे और सांस लेने के लिए भी प्रदूषित वायु और उससे होने वाली तमाम तरह की सांस संबंधी

बीमारियां हमारी नियति हो गईं।

3. **भू प्रदूषणः** औद्योगिक कारखानों से निकलने वाले विषैले रसायनिक पदार्थ मिट्टी में जाते हैं। इससे हमारी उपजाऊ मिट्टी भी बंजर व विषैली होती जा रही है। बढ़ती हुई जनसंख्या ने किसानों पर ज्यादा अनाज उगाने का दबाव बना दिया है। फसलें जल्दी तैयार करने के लिए और उन्हें कीट पतंगों से बचाने के लिए अब किसान कीटनाशक का प्रयोग करने लगे हैं। इससे मिट्टी की उर्वरा समाप्त हो जाती है हम एक परमाणु संपन्न देश हैं पर ये परमाणु हमारी धरा को कितना नुकसान पहुंचा रहे हैं यह देखना भी आवश्यक है। जहां पर परमाणु परीक्षण होते हैं वहां दूर-दूर तक केवल राख ही राख नजर आती है।

4. **ध्वनि प्रदूषणः** औद्योगिकीकरण ने हमारे स्वास्थ्य और जीवन को खतरे पर रख दिया है क्योंकि सभी (बड़े या छोटे) उद्योग मशीनों का प्रयोग करते हैं जो बहुत ज्यादा मात्रा में तेज आवाज पैदा करती है। कारखानों और उद्योगों में प्रयोग होने वाले अन्य उपकरण (कम्प्रेशर, जेनरेटर, गर्मी निकालने वाले पंखे, मिल) भी बहुत शोर उत्पन्न करते हैं। सामान्य सामाजिक उत्सव जैसे शादी, पार्टी, पब, क्लब, डिस्क, या पूजा स्थल के स्थान मन्दिर, मस्जिद, आदि आवासीय इलाकों में शोर उत्पन्न करते हैं। शहरों में बढ़ते हुए यातायात के साधन (बाइक, हवाई जहाज, अंडर ग्राउंड ट्रेन आदि) तेज शोर का निर्माण करते हैं। सामान्य निर्माणी गतिविधियाँ (जिसमें खानों, पुलों, भवनों, बांधों, स्टेशनों, आदि का निर्माण शामिल है), जिसमें बड़े यंत्र शामिल होते हैं उच्च स्तर का शोर उत्पन्न करते हैं। दैनिक जीवन में घरेलू उपकरणों का उपयोग ध्वनि प्रदूषण का मुख्य कारण है।

5. रेडियोधर्मी प्रदूषण

i. प्राकृतिक स्रोत
   a) आंतरिक किरणें,
   b) पर्यावरण (जल, वायु एवं शैल),
   c) जीव-जंतु (आंतरिक)।

ii. मनुष्य निर्मित स्रोत
   a) रेडियो डायग्नोसिस (Radio Diagnosis) एवं रेडियोथेरेपिक (Radio Therepeutic) उपकरण,
   b) नाभिकीय परीक्षण (Nuclear text)
   c) नाभिकीय अपशिष्ट (Nuclear Waste)
   d) नाभिकीय पदार्थों का अनुसंधान औषधि एवं उद्योग में उपयोग

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम

19 नवंबर 1986 से पर्यावरण संरक्षण अधिनियम लागू हुआ. तदनुसार जल, वायु, भूमि - इन तीनों से संबंधित कारक तथा मानव, पौधों, सूक्ष्म जीव, अन्य जीवित पदार्थ आदि पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम के कई महत्त्वपूर्ण बिंदु हैं. जैसे -

1. पर्यावरण की गुणवत्ता के संरक्षण हेतु सभी आवश्यक कदम उठाना।
2. पर्यावरण प्रदूषण के निवारण, नियंत्रण और उपशमन हेतु राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम की योजना बनाना और उसे क्रियान्वित करना।
3. पर्यावरण की गुणवत्ता के मानक निर्धारित करना।
4. पर्यावरण सुरक्षा से संबंधित अधिनियमों के अंतर्गत राज्य-सरकारों, अधिकारियों और संबंधितों के काम में समन्वय स्थापित करना।
5. ऐसे क्षेत्रों का परिसीमन करना, जहाँ किसी भी उद्योग की स्थापना अथवा औद्योगिक गतिविधियां संचालित न की जा सकें।

उक्त-अधिनियम का उल्लंघन करने वालों के लिए कठोर दंड का प्रावधान है।

पेरिस जलवायु समझौता

पेरिस जलवायु समझौता हमारे पर्यावरण को बचाने की प्रक्रिया में एक सार्थक कदम है। यह समझौता जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने और वैश्विक तापमान में बढ़ोत्तरी को 2 डिग्री सेल्सियस के भीतर सीमित रखने से जुड़ा है। अब तक 197 देश इस समझौते में सम्मलित हो चुके हैं। भारत ने भी 1 अक्टूबर 2016 को इस समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। कार्बन उत्सर्जन और ग्लोबल वार्मिंग को काबू में रखने के लिये पेरिस सम्मेलन के दौरान सदस्य देशों ने अपने-अपने योगदान को लेकर प्रतिबद्धता जताई थी।

हरेक देश ने स्वेच्छा से कार्बन उत्सर्जन में कटौती के अपने लक्ष्य पेश किए थे। ये लक्ष्य न तो कानूनी रूप से बाध्यकारी हैं न ही इन्हें लागू कराने के लिये कोई व्यवस्था बनी है। फिलहाल अमेरिका ने अपने आपको ये कहते हुए इस समझौते से अलग कर लिया कि इससे उनकी अर्थवयवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। अमेरिका ने यह आरोप लगाया कि विकासशील देश इस समझौते से मिलने वाली आर्थिक सहायता का दुरुपयोग कर रहे हैं। ये सहायता इन देशों में कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए दी जाती है पर ये देश इस राशि का उपयोग कहीं और कर रहे है। अमेरिका के अलग होने के बाद भारत की भूमिका इसमें बहुत बढ़ जाती है। ये भारत के लिए एक सुनहरा अवसर है जब हम एक मजबूत ताकत के रूप में उभर सकते है। भारत एक बार में कई कठिन चीजें कर रहा है, अपनी तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था को

सत्ता में लाना, लाखों लोगों को गरीबी से बाहर निकालने और स्वच्छता अर्थव्यवस्था का निर्माण करने के लिए संघर्ष कर रहा है। यह बोल्ड नेतृत्व है।

क्योटो संधि

क्योटो प्रोटोकॉल संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण बदलाव पर एक अंतर्राष्ट्रीय संधि है। इस संधि पर दिसम्बर, 1997 में क्योटो सम्मेलन के दौरान हस्ताक्षर किए गये। यह एक कानूनी एवं बाध्यकारी संधि है। इसके तहत संधि में शामिल सभी 38 विकसित देशों द्वारा सामूहिक रूप से ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को 1990 के स्तर पर लाने के लिए 2012 तक 5.2 प्रतिशत कटौती करने का संकल्प व्यक्त किया गया। क्योटो प्रोटोकॉल के तहत पहली प्रतिबद्धता अवधि 2008–2012 से थी। 2012 – 2020 की अवधि के लिए दूसरी प्रतिबद्धता अवधि 2012 में क्योटो प्रोटोकॉल के दोहा संशोधन द्वारा अपनाया गया था। सन् 2020 तक कार्बन उत्सर्जन में व्यापक कमी लाकर जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों को दूर करने की कोशिश की जाएगी।

गो ग्रीन

"गो ग्रीन" का अर्थ "ज्ञान और प्रथाओं को आगे बढ़ाना है जो पर्यावरण के अनुकूल और पारिस्थितिक रूप से जिम्मेदार निर्णय और जीवनशैली का नेतृत्व कर सकता है, जो पर्यावरण की सुरक्षा में मदद कर सकता है और वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए अपने प्राकृतिक संसाधनों को बनाए रख सकता है। यूएस चेंबर ऑफ कॉमर्स लघु व्यवसाय राष्ट्र ने ऊर्जा को बचाने, प्रदूषण को कम करने और पैसे बचाने के लिए कदम उठाते हुए गो ग्रीन की परिभाषा दी है। इसी 22 अप्रैल को हमने पृथ्वी दिवस की 40वीं वर्षगांठ मनाई है। आज के समय में पर्यावरण का ध्यान रखना हर किसी की जिम्मेदारी और अधिकार होना चाहिए और विशेषकर आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्यावरण का संरक्षण बहुत जरुरी है।

पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ

पेड़ पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण अंग है। पेड़ ऑक्सीजन प्रदान करके, वायु की गुणवत्ता में सुधार, जलवायु में सुधार, जल संरक्षण, मिट्टी के संरक्षण और वन्यजीव को समर्थन देने के द्वारा अपने पर्यावरण में योगदान देते हैं। सरकार ने वनों की रक्षा के लिये कड़े कदम उठाये हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वन महोत्सव कार्यक्रम चलाया गया था। आज भी हरे भरे पेड़ों को काटना कानूनन अपराध है। सरकार ने कई राज्यों में राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य स्थापित किए हैं। वर संरक्षण के लिए बहुत अधिक प्रयास किए जा रहे हैं। विद्यालयों में भी इसको प्रोत्साहित करने के लिए बच्चों से वृक्ष लगवाए जाते हैं।

सरकारी योजनाएं

1. **स्वच्छ भारत अभियानः** नई दिल्ली में राजपथ पर स्वच्छ भारत अभियान का शुभारंभ करते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, "2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर भारत उन्हें स्वच्छ भारत के रूप में सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि दे सकता है।" 2 अक्टूबर 2014 को देश भर में एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत हुई। साल 2019 (गांधीजी की 150वीं जयंती) तक हर गांव, शहर, कस्बे को साफ करना। पक्के टॉयलेट, पीने का साफ पानी, कचरा निपटाने की ठोस व्यवस्था करना। 1.96 लाख करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है। स्वच्छ भारत अभियान लोगों का जोरदार समर्थन पाकर 'जन आंदोलन' बन गया। आम नागरिक भी बड़ी संख्या में आगे आए और उन्होंने साफ-सुथरे भारत का प्रण लिया। स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत के बाद सड़कों की सफाई के लिए हाथों में झाडू थामना, सफाई पर ध्यान केंद्रित करना और स्वच्छ माहौल बनाने की कोशिश लोगों की आदत बन गई। लोग इस अभियान में शामिल हो रहे हैं और इस संदेश को फैलाने में मदद कर रहे हैं कि 'ईश्वर की भक्ति के बाद स्वच्छता सबसे बड़ी भक्ति है'।

2. **नमामि गंगे प्रोजेक्टः** सरकार ने गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने और नदी को पुनर्जीवित करने के लिए 'नमामि गंगे' नामक एक एकीकृत गंगा संरक्षण मिशन का शुभारंभ किया। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने नदी की सफाई के लिए बजट को चार गुना करते हुए 2019–2020 तक नदी की सफाई पर 20,000 करोड़ रुपए खर्च करने की केंद्र की प्रस्तावित कार्य योजना को मंजूरी दे दी और इसे 100% केंद्रीय हिस्सेदारी के साथ एक केंद्रीय योजना का रूप दिया। कार्यक्रम के कार्यान्वयन को शुरूआती स्तर की गतिविधियों (तत्काल प्रभाव दिखने के लिए), मध्यम अवधि की गतिविधियों (समय सीमा के 5 साल के भीतर लागू किया जाना है), और लंबी अवधि की गतिविधियों (10 साल के भीतर लागू किया जाना है) में बांटा गया है।

3. राष्ट्रीय पर्यावरण नीति, 2004

पर्यावरण तथा वन मंत्रालय ने दिसम्बर 2004 को राष्ट्रीय पर्यावरण नीति 2004 का ड्राफ्ट जारी किया है। इसकी प्रस्तावना में कहा गया है

कि समस्याओं को देखते हुए एक व्यापक पर्यावरण नीति की आवश्यकता है। साथ ही वतर्मान पर्यावरणीय नियमों तथा कानूनों को वतर्मान समस्याओं के संदर्भ में संशोधन की आवश्यकता को भी दर्शाया गया है। राष्ट्रीय पर्यावरण नीति के निम्न मुख्य उद्देश्य रखे गए हैं:

- संकटग्रस्त पर्यावरणीय संसाधनों का संरक्षण करना
- पर्यावरणीय संसाधनों पर सभी के विशेषकर गरीबों के समान अधिकारों को सुनिश्चित करना
- संसाधनों का न्यायोचित उपयोग सुनिश्चित करना ताकि वे वर्तमान के साथ-साथ भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की भी पूर्ति कर सकें
- आर्थिक तथा सामाजिक नीतियों के निर्माण में पर्यावरणीय संदर्भ को ध्यान में रखना
- संसाधनों के प्रबंधन में खुलेपन, उत्तरदायित्व तथा भागीदारिता के मूल्यों को शामिल करना

4. राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस 2017

राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस 2017 में शनिवार 2 दिसंबर को मनाया जाएगा। हर साल राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस मनाने के प्रमुख कारकों में से एक औद्योगिक आपदा के प्रबंधन और नियंत्रण के साथ ही पानी, हवा और मिट्टी के प्रदूषण (औद्योगिक प्रक्रियाओं या मैनुअल लापरवाही के कारण उत्पन्न) की रोकथाम है। सरकार द्वारा पूरी दुनिया में प्रदूषण को गंभीरता से नियंत्रित करने और रोकने के लिए बहुत से कानूनों की घोषणा की गयी। राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस हर साल 2 दिसंबर को प्रदूषण नियंत्रण अधिनियमों की आवश्यकता की ओर बहुत अधिक ध्यान देने के लिये लोगों को और सबसे अधिक उद्योगों को जागरूक करने के लिए मनाया जाता है।

आम नागरिक की भूमिका: पर्यावरण के सरंक्षण के लिए हमें ज्यादा कुछ करने की जरुरत नहीं है बल्कि छोटी-छोटी सावधानी से हम पर्यावरण व काफी ऊर्जा बचा सकते हैं।

पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण: आज के इस मशीनी युग में प्रकृति की सुरक्षा एवं संरक्षण बहुत आवश्यक है। कोई भी व्यक्ति जरा सी इच्छा रख और थोड़े से प्रयास से पर्यावरण को संरक्षित कर सकता है। पर्यावरण संरक्षण व जलवायु परिवर्तन ने पूरी दुनिया को प्रभावित कर रखा है। इस समस्या से उबरने के लिए पूरी दुनिया को एक होने की जरूरत है। गरीब देश जो मुख्य रूप से अपने अस्तित्व के लिए प्राकृतिक वातावरण पर निर्भर है उन्हें इस वातावरण ने बुरी तरह प्रभावित किया हुआ है। ऐसे देशों को गरीबी से निपटने के लिए पर्यावरण संबंधी चिंताओं से निपटने में सक्षम होने के लिए मदद की जरूरत है।

पानी की खपत कम करना: जल ही जीवन है। स्वच्छ और ताजा पानी समय के साथ और अधिक से अधिक कीमती होता जा रहा है और अगर हम अब तक इसे बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर रहे हैं तो भविष्य में पानी सोने से अधिक कीमती होगा। इसलिए ये महत्वपूर्ण है कि जो कुछ भी हम कर सकते हैं इसे बचाने के लिए और पानी के प्रदूषण को रोकने के लिए वो अधिक प्रयास के साथ करना चाहिए। जब भी हम ब्रश करें नल बंद रखें, स्नान के समय कम पानी खराब करें, वाशिंग मशीन का उपयोग केवल तब करें जब कपड़े ज्यादा हो। तेल और रंग नालियों में नहीं बहाना चाहिए क्योंकि वे नदियों और अंत में समुद्र को गंदा करता है।

बिजली के उपयोग को कम करें: एक बार जब हम एक बिजली के उपकरण का उपयोग कर चुके हों तब उसे बंद कर दें। इससे आप अपने बिजली के बिल को ही नहीं बल्कि ऊर्जा को भी बचाएंगे। ऊर्जा को बचाने के लिए आजकल एलईडी बल्ब आ गए हैं, उन्हें अपने घर के बल्ब से बदल दें। एक बार जब हम कार्यालय छोड़ देते हैं, अपने कंप्यूटर और मॉनिटर को बंद करके निकलें। इस तरह से आप बिजली की खपत को कम करने में मदद करेंगे।

पौधे लगाओ: पेड़ ऑक्सीजन का सबसे बड़ा स्रोत होते हैं और हम उन्हें उगाने के बजाय काट देते हैं। हर व्यक्ति एक पेड़ लगाए, तो जीवन में काफी सुधार होगा। हवा साफ होगी, पेड़ों की संख्या वापस सामान्य हो जाएगी, प्रदूषण ग्लोबल वार्मिंग और ग्रीन हाउस प्रभाव कम हो जाएगा।

दोस्तों, एक बात हमेशा याद रखें कि जबतक हम खुद पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम के लिये कोई कदम नही उठाते तबतक हम इस समस्या को दूर नहीं कर सकते।

पेड़ों की छाया में ही तो
पंछियों का रैन बसेरा है ।
इनके होने से हम हैं
और कहते जीवन मेरा है ।

प्रधान कार्यालय, भविष्य निधि विभाग

पहचान पाने की लालसा न रखें।

प्रधान कार्यालय स्तर पर अंतर बैंक प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 10 अगस्त 2017 को अंतर बैंक आशु-भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता भाई वीर सिंह साहित्य सदन के निदेशक डॉ. मोहिंदर सिंह द्वारा की गई। इस अवसर पर नराकास सचिव श्री प्रेम चंद शर्मा, हमारे बैंक के सहायक महा प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली, भारतीय स्टेट बैंक की मुख्य प्रबधक(राजभाषा) सुश्री स्मिति मिसरा, आईडीबीआई बैंक के सहायक महा प्रबंधक डॉ. आर.पी.सिंह तथा राष्ट्रीय आवास बैंक के सहायक महाप्रबंधक श्री रंजन कुमार बरून भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

राजभाषा संबंधी निरीक्षण व लघु संगोष्ठी

दिनांक 21.09.2017 प्र.का.राजभाषा विभाग के सहायक महाप्रबंधक श्री राजिंदर सिंह बेवली द्वारा बीकानेर की आर के कॉम्प्लैक्स शाखा का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया। इसी दौरान शाखा के सभी स्टाफ सदस्यों के लिए यूनोकोड प्रशिक्षण का तथा 'बैंक की लाभप्रदता बढ़ाने में भाषा का महत्व' विषयक एक लघु संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। इस अवसर का एक चित्र, जिसमें श्री बेवली के साथ शाखा प्रबंधक सुश्री प्रियंका मीणा तथा स्टाफ सदस्य दिखाई दे रहे हैं।

आपदाओं से जूझने में मॉक ड्रिल की भूमिका

कैप्टन धर्मपाल सिंह पुन्डीर

मनुष्य का जीवन एवं उसके द्वारा अर्जित परिसंपत्तियों को दुर्घटनाओं से सदैव ही बड़ा खतरा रहा है। कई बार ये दुर्घटनाएं प्राकृतिक आपदा के रूप में आती हैं तो कभी-कभी मानवीय भूल भी दुर्घटना का एक बड़ा कारण बन जाती है। दुर्घटना चाहे किसी भी कारण से हुई हो, जान-माल की बड़ी क्षति की आशंकाओं को लिए हुए रहती है। इसलिए हमें इन्हें हर हाल में रोकना है, इनके प्रभाव को शमित करना है। आग लगना एक ऐसी ही गंभीर दुर्घटना है, जिसकी आशंका बहु-मंज़िला इमारतों पर सदैव ही मंडराती रहती है। इससे होने वाली जान-माल की भीषण क्षति को रोकने के लिए बहु-मंज़िला इमारतों में अग्नि-शमन की व्यवस्था भली-भाँति होनी चाहिए। बड़ी-बड़ी इमारतों में अग्नि-शमन एक गंभीर चुनौती है। आग लगने की दुर्घटना की सबसे भयावह स्थिति होती है, कुछ ही मिनटों में आग का बेकाबू हो जाना। अतः कुछ पलों की भी लापारवाही अत्यंत भीषण आपदा का रूप ले सकती है। हजारों की संख्या में काम कर रहे कर्मचारियों को कम से कम समय में, पूरी तरह सुरक्षित रखते हुए, बाहर निकालना अत्यंत मुश्किल कार्य है। इस कार्य हेतु इन इमारतों में विशेष रूप से दक्ष लोगों की एवं काफी यंत्रों की जरूरत पड़ती है। विशेष रूप से दक्ष सुरक्षा अधिकारियों के दिशा-निर्देशों को अविलंब मानना बेहद जरूरी होता है, विशेष रूप से- लिफ्ट, निकासी एवं बिजली संबंधी उपकरण। अग्नि-शमन के लिए विशेष रूप से रखे गए यंत्र सदैव अच्छी स्थिति में हों, यह अत्यावश्यक है। इन यंत्रों का रख-रखाव एवं उपयोग में लाने की कला जन-सामान्य को भी आनी चाहिए। अपनी कार्य क्षमता को निरंतर स्तरीय बनाए रखना भी एक गंभीर चुनौती है। विशेषज्ञों की राय में अग्नि-शमन की क्षमता की बराबर जाँच करते रहना, इस दिशा में उठाया जाने वाला एक जरूरी कदम है। मॉक ड्रिल की अवधारणा इसी क्षमता-संवर्धन की सोच से जुड़ी हुई है। मॉक ड्रिल में सदस्यों को हादसे के दौरान ली जाने वाली सावधानियों एवं यंत्रों के उपयोग के बारे में अवगत कराया जाता है। एक मॉक ड्रिल, अभ्यास करने की एक विधि है जिसमें आग या अन्य आपातकाल की स्थिति में एक इमारत और उस वक्त में उस इमारत में रह-रहे लोगों को कैसे निकाला जाए, इस बात पर जोर होता है। भवन का मौजूदा अग्नि अलार्म सिस्टम सक्रिय कर दिया जाता है और बिल्कुल उसी तरह का माहौल दिखलाया जाता है जैसा अमूमन आग लगने पर होता है। इसके लिए पहले से ही पूरी तैयारी कर ली जाती है। इमारत को खाली करवा किसी आपातकालीन स्थिति से निपटने की खुद की तैयारी का जायजा लिया जाता है। मॉक ड्रिल की अच्छी बात यह है कि सभी स्टाफ सदस्यों को हादसे के वक्त ली जाने वाली सावधानियों के बारे में पता होता है। वो मॉक ड्रिल में अच्छे तरीके से सहयोग करते हैं।

मॉक ड्रिल की जरूरत को समझते हुए दिनांक- 25.08.2017 को हमारे बैंक के प्रधान कार्यालय (बैंक हाउस बिल्डिंग) में दोपहर 3.00 बजे अग्नि-शमन मॉक ड्रिल का आयोजन दिल्ली फायर सर्विस एवं बैंक के प्रधान कार्यालय, सुरक्षा विभाग के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। मॉक ड्रिल के दौरान की जाने वाली प्रक्रियाएं इस प्रकार हैं।

1. बैंक हाउस के छठे तल पर फायर अलार्म बजाकर आग लगना दर्शाया गया।

2. अलार्म बजते ही रिसेप्शन सेंटर के पीछे स्थित कंट्रोल रूम ने काम करना शुरू कर दिया। मुख्य सुरक्षा अधिकारी एवं मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा-विभाग) ने दौड़कर कंट्रोल रूम से बारी-बारी से अंग्रेजी एवं हिंदी में उद्घोषणा द्वारा स्टाफ को छठे तल पर आग लगने की सूचना दी।

3. उद्घोषणा द्वारा सभी स्टाफ सदस्यों को बताया गया कि वे धैर्य रखें और शांति के साथ फ्लोर मार्शल एवं डिप्टी फ्लोर मार्शल के निर्देशन में बैंक परिसर को तुरंत खाली करें। फ्लोर मार्शल एवं डिप्टी फ्लोर मार्शल द्वारा इस बारे में मार्गदर्शन दिए गए। सातवें और आठवें तल के सदस्य स्काई लैडर द्वारा बैंक भवन के साथ वाले ''पद्मा-टावर'' से होते हुए बाहर आए। चौथे तल से छठे तल के सदस्य मुख्य सीढ़ियों द्वारा एवं पहले तल से तीसरे तल के सदस्य आपातकालीन सीढ़ियों द्वारा बिल्डिंग से बाहर निकले और पूर्व निर्धारित स्थान पर एकत्रित हो गए।

4. सभी तलों से कुल 318 स्टाफ सदस्य पूर्व निर्धारित असेंबली एरिया में एकत्रित हुए और 43 सदस्य स्काइ लैडर द्वारा ''पद्मा-टावर'' से होते हुए असेंबली एरिया पहुँचे।

5. सभी सदस्यों ने 15 मिनट के अंदर बैंक परिसर खाली कर दिया।

6. इसके बाद श्री राजेंद्र सिंह सब फायर ऑफिसर के नेतृत्व में एक लाइव डेमोन्स्ट्रेशन हुआ जिसमें फायर हाइड्रेंट के इस्तेमाल का नमूना पेश किया गया और पानी की धार को छठे तल तक जाते हुए दिखलाया गया। यह वास्तव में एक अद्भुत नजारा था। सदस्यों को ABC टाइप और CO_2 टाइप अग्नि-शामकों के इस्तेमाल के बारे में जानकारी दी गई। इस डेमो में 08 स्टाफ सदस्यों को, जिनमें से चार महिला सदस्य थीं, को अग्नि-शमकों को चलाना सिखलाया गया। सभी स्टाफ सदस्यों ने मॉक ड्रिल में उत्साहित होकर हिस्सा लिया। मॉक ड्रिल ने सभी सदस्यों में नया जोश और आत्म-विश्वास भरने का कार्य किया।

7. मॉक ड्रिल 4.00 बजे समाप्त हो गई। सभी स्टाफ सदस्य अपने मन में विश्वास की दृढ़ता को लिए अपने-अपने डेस्क पर वापस आ गए। उपरोक्त रिपोर्ट में मॉक ड्रिल की प्रक्रियाओं को समझाने का प्रयास किया गया है। मॉक ड्रिल की जरूरत, आपदाओं से लड़ने की हमारी जिजीविषा से सीधे जुड़ा हुआ मसला है। अंग्रेजी की एक पुरानी कहावत है- 'प्रैक्टिसेस मेक मेन परफेक्ट'। मॉक ड्रिल को गंभीरता से लेने का सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि इससे सुरक्षा अधिकारियों / कर्मचारियों एवं सामान्य लोगों को अपने-अपने दायित्वों के निर्वहन का अच्छा-खासा अनुभव हो जाता है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः मॉक ड्रिल समय-समय पर, पूरी तैयारी के साथ होनी चाहिए जिससे हम किसी भी समय, किसी भी तरह की दुर्घटना से, स्वयं एवं दूसरों को बचा सकें।

प्रधान कार्यालय, सुरक्षा विभाग

मॉक ड्रिल

बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरबीर सिंह(आई.ए.एस.) मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री संजय जैन, महाप्रबंधक(मा.सं.वि) सुभाष क्वात्रा, महाप्रबंधक(अग्रिम) श्री वीरेन्द्र गुप्ता, महाप्रबंधक(सामान्य प्रशासन) जी.एस.ढल्ल, महाप्रबंधक(आई.टी) श्रीमती हरविन्दर सचदेव आदि उच्चाधिकारियों को मॉक ड्रिल संबंधी जानकारी देते बैंक के मुख्य सुरक्षा अधिकारी एवं उप-महाप्रबंधक कर्नल भूपराज सिंह।

मॉक ड्रिल के दौरान अग्नि-शमन दल के सदस्य, बैंक के कर्मचारियों को अग्नि-शामक को प्रयोग में लाने की विधि बताते हुए।

स्टाफ-सदस्य स्काई-लैडर के प्रयोग से बैंक हाउस के साथ वाली इमारत पर जाते हुए।

बैंक के कर्मचारियों को अग्नि-शमन दल, मास्क के प्रयोग की विधि को प्रदर्शित करते हुए।

मॉक ड्रिल के दौरान सुरक्षा अधिकारियों के निर्देशों का पालन करते आठ मंज़िला इमारत बैंक हाउस की छत पर बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री फरीद अहमद एवं अन्य अधिकारी तथा कर्मचारी-गण।

बैंक के विभिन्न आँचलिक कार्यालयों में

आँचलिक कार्यालय होशियारपुर

आँचलिक कार्यालय जालंधर

आँचलिक कार्यालय गुरदासपुर

हिंदी पखवाड़े तथा हिंदी दिवस का आयोजन

आँचलिक कार्यालय भोपाल

आँचलिक कार्यालय पटियाला

आँचलिक कार्यालय हरियाणा

आँचलिक कार्यालय चंडीगढ़

सहभागी

मलयालम भाषा

വിധിക്കുന്നതിനു മുന്പ് ചിന്തിക്കുക

ലൂലു ശേഖരന്

ഈ സംഭവത്തി ഒരു മനുഷ്യ തന്റെ പ്രവൃത്തനത്തോടുള്ള വികാരവും ഉത്തരവാദിത്വവും കാണിക്കുന്നു തന്റെ ജോലി ഉത്തരവാദിത്വത്തോടെ ചെയ്യാന്എത്തിയതായിരുന്നുആ ഡോക്ടര്.അല്പം വൈകിയതിനാല്തിടുക്കത്തില്ആശുപത്രിയുടെ കവാടം കടന്നു അയാള്ഓപ്പറേഷന്തിയറ്ററിനു മുന്പിലെത്തി.അവിടെ അപകടത്തില്പെട്ട് അത്യാസന്നനിലയില്കിടക്കുന്ന കുട്ടിയുടെ അച്ഛന്അക്ഷമനായി ഡോക്ടറെ പ്രതീക്ഷിച്ചു നില്ക്കുന്നുണ്ടായിരുന്നു.ഡോക്ടറെ കണ്ട ഉടനെ കുട്ടിയുടെ അച്ഛന്ദേഷ്യത്തോടെ ചോദിച്ചു 'നിങ്ങള്എന്താണ് ഇത്ര വൈകിയത്?എന്റെ മകന്റെ അവസ്ഥ നിങ്ങള്ക്ക്അറിഞ്ഞുകൂടെ?നിങ്ങള്ക്ക്ഒരു ഉത്തരവാദിത്വവും ഇല്ലേ? പുഞ്ചിരിച്ചുകൊണ്ട് ഡോക്ടര്പറഞ്ഞു, ഞാനുങ്ങളെ വേദിക്കുന്നു.ആശുപത്രിയില്ഇല്ലാതിരുന്നതിനാലവിളിച്ച ഉടനെ ഇവിടെ എത്തുവാന്എനിക്കു സാധിച്ചില്ല. എനിക്കു പറ്റാവുന്ന അത്രയും വേഗത്തില്ആണ് ഞാന് ഇവിടെ എത്തിയത്. നിങ്ങള്ശാന്തനാകൂ, എന്നെ എന്റെ ജോലി ചെയാന്അനുവദിച്ചാലും.

ശാന്തനാകാനോ?? നിങ്ങളുടെ മകനാണ് ഈ അവസ്ഥയില് ഇവിടെ കിടക്കുന്നത് എങ്കില് ശാന്തനാകാന്നിങ്ങള്ക്ക് സാധിക്കുമോ? നിങ്ങളുടെ മകനാണ് ചികില്സ ലഭിക്കാതെ മരിക്കുന്നതെങ്കില്നിങ്ങള്എന്തുചെയ്യും??ക്ഷുഭിതനായ അച്ഛന്ബഹളമുണ്ടാക്കാന്തുടങ്ങി.

ഡോക്ടര്വീണ്ടും പുഞ്ചിരിച്ചു കൊണ്ട് പറഞ്ഞു, നിങ്ങളുടെ മകനെ രക്ഷിക്കാന്ഞങ്ങള്ഞങ്ങളുടെ പരമാവധി ശ്രമിക്കും. ദൈവം അനുഗ്രഹിക്കട്ടെ മകന്റെ രക്ഷയ്ക്കു വേണ്ടി നിങ്ങളും ദൈവത്തിനോട് പ്രാര്ഥിക്കൂ. ഇത്രയും പറഞ്ഞുകൊണ്ട് ഡോക്ടര്ഓപ്പറേഷന്തിയറ്ററിലേക് കയറി പോയി.

മണിക്കൂറുകള്ക്ക് ശേഷം ഓപ്പറേഷന്കഴിഞ്ഞു സന്തോഷവാനായി ഡോക്ടര്പുറത്തേക്കു വന്നു. ദൈവത്തിനു നന്ദി!! നിങ്ങളുടെ മകന്അപകടനില തരണംചെയ്തിരിക്കുന്നു. കൂടുതല്എന്തെങ്കിലും അറിയണമെങ്കില്നഴ്സിനോട് ചോദിച്ചാല്മതി.. എന്നു പറഞ്ഞുകൊണ്ട് ആരുടേയും ചോദ്യത്തിനുംമറുപടിക്കും കാത്തുനില്ക്കാതെ തിടുക്കത്തില്ഡോക്ടര്പുറപ്പെട്ടു.

തന്റെ മകന്റെ അവസ്ഥ പോലും പറയാതെ ഡോക്ടര്എന്തുകൊണ്ടാണ് ഇത്ര തിടുക്കത്തില്പോയത് എന്നു ചോദിച്ച അച്ഛനോട് നിറമിഴികളോടെ നഴ്സ് പറഞ്ഞു,'ഇന്ന് രാവിലെ ഉണ്ടായ ഒരു അപകടത്തില്പെട്ട് ഡോക്ടറുടെ മകന്മരിച്ചുപോയി. മകന്റെ സംസ്കാരചടങ്ങുകളില്പങ്കെടുക്കുമ്പോഴാണ് നിങ്ങളുടെ മകന്റെ അപകടവിവരം അറിയുന്നതും ചികില്സിക്കാനായി അദ്ദേഹം ഇവിടെ എത്തുന്നതും'. ഇതുകേട്ട് ചികില്സയില്കഴിയുന്ന കുട്ടിയുടെ അച്ഛനും മറ്റ് ബന്ധുക്കളും ഞെട്ടിപ്പോയി. തങ്ങള്ചെയ്ത തെറ്റിനെക്കുറിച്ചോര്ത്ത് അവര്പശ്ചാത്തപിച്ചു.

സന്ദേശം: മറ്റുള്ളവരുടെ അവസ്ഥകള്അറിയാതെയും മനസിലാക്കാതെയും ഒരിയ്ക്കലും ഒരാളെ കുറ്റപ്പെടുത്തരുത്.

അധികാരി മേഖലാ കാര്യാലയം, ചെന്നൈ

हिंदी रूपांतर

न्याय करने से पहले सोचें

लुलु शेखरन

इस घटना में एक आदमी की अपने काम के प्रति उसकी लगन और जिम्मेवारी को दर्शाया गया है। एक डॉक्टर बड़ी ही तेजी से हॉस्पिटल में घुसा, उसे किसी एक्सीडेंट के मामले में तुरंत बुलाया गया था। अंदर घुसते ही उसने देखा कि जिस लड़के का एक्सीडेंट हुआ है उसके परिजन बड़ी बेसब्री से उसका इंतजार कर रहे हैं।

डॉक्टर को देखते ही लड़के का पिता बोला, ''आप लोग अपनी ड्यूटी ठीक से क्यों नहीं करते, आपने आने में इतनी देर क्यों लगा दी अगर मेरे बेटे को कुछ हुआ तो इसके जिम्मेदार आप होंगे''

डॉक्टर ने विनम्रता कहा, ''आई ऍम सॉरी, मैं हॉस्पिटल में नहीं था, और कॉल आने के बाद जितना तेजी से हो सका मैं यहाँ आया हूँ। कृपया अब आप लोग शांत हो जाइए ताकि मैं इलाज कर सकूँ।''

शांत हो जाइए- लड़के का पिता गुस्से में बोला, क्या इस समय अगर आपका बेटा होता तो आप शांत रहते, अगर किसी की लापरवाही की वजह से आपका अपना बेटा मर जाए तो आप क्या करेंगे ?'' पिता बोले ही जा रहा था।

भगवान चाहेगा तो सब ठीक हो जाएगा। आप लोग दुआ कीजिए मैं इलाज के लिए जा रहा हूँ और ऐसा कहते हुए डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर में प्रवेश कर गया।

लड़के का पिता अभी भी बुदबुदा रहा था, सलाह देना आसान होता है, जिस पर बीतती है वही जानता है। ऑपरेशन खत्म होने के बाद डॉक्टर बाहर निकला और मुस्कुराते हुए बोला, ''भगवान् का शुक्र है आपका बेटा अब खतरे से बाहर है''।

यह सुनते ही लड़के के परिजन खुश हो गए और डॉक्टर से सवाल पर सवाल पूछने लगे, वो कब तक पूरी तरह से ठीक हो जायेगा। उसे डिस्चार्ज कब करेंगे? पर डॉक्टर जिस तेजी से आया था उसी तेजी से वापस जाने लगा और लोगों से अपने सवाल नर्स से पूछने को कहा।

ये डॉक्टर इतना घमंडी क्यों है, ऐसी क्या जल्दी है कि वो दो मिनट हमारे सवालों का जवाब नहीं दे सकता? लड़के के पिता ने नर्स से कहा।

नर्स लगभग रुंआसी होती हुई बोली, आज सुबह डॉक्टर साहब के लड़के की एक भयानक एक्सीडेंट में मौत हो गयी और जब हमने उन्हें फोन किया था तब वे उसका अंतिम संस्कार करने जा रहे थे और बेचारे अब आपके बच्चे की जान बचाने के बाद अपने लड़के का अंतिम संस्कार करने के लिए वापस लौट रहे हैं।''

यह सुन लड़के के परिजन और पिता स्तब्ध रह गए और उन्हें अपनी गलती का एहसास हो गया।

दोस्तो! बहुत बार हम किसी स्थिति के बारे में अच्छी तरह जाने बिना ही उसपर रियेक्ट कर देते हैं। पर हमें चाहिए कि हम खुद पर नियंत्रण रखें और पूरी स्थिति को समझे बिना कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया न दें, वर्ना अनजाने में हम उसे ही ठेस पहुँचा सकते हैं जो हमारा ही भला सोच रहा होता है।

संदेशः बिना सोचे समझे दूसरों को दोष न दें।

आँचलिक कार्यालय,चेन्नई।

आज का काम कल पर न टालें।

ग्राहक के मुख से........

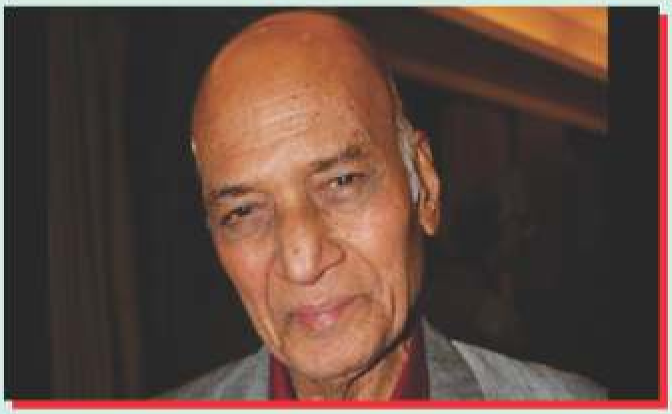

मैं खय्याम, पंजाब एण्ड सिंध बैंक से आज से नहीं बल्कि-लगभग 35 वर्षों से जुड़ा हुआ हूँ। तब से लेकर आज तक शाखा के सभी सदस्यों ने मुझे बहुत प्यार और मान दिया है। पंजाब एण्ड सिंध बैंक से असल में जोड़ने वाला हमारा बेटा प्रदीप खय्याम था जो आज इस दुनिया में नहीं है। बैंक से उसका बहुत अधिक लगाव था। आज जो शाखा की मैनेजर चंद्राणी जी हैं वे उस समय सेविंग बैंक देखा करती थीं और मेरा बेटा लगभग रोज ही शाखा में जाया करता था और बताता था कि आज बैंक ने कैसे अच्छे व्यवहार का परिचय दिया। हमने शुरू से ही अपना खाता एक ही बैंक में रखा है। इस बैंक से हमें बहुत आराम मिला, बहुत हैल्प मिली, कभी किसी भी किस्म की कोई तकलीफ नहीं हुई। इतने सालों से जुड़ने के बाद तो इस बैंक को मैं अपना बैंक कहता हूँ। बहुत संभव है कि मैं इस ब्रांच का सबसे पुराना ग्राहक भी हो सकता हूँ, नहीं तो बहुत पुराना ग्राहक तो हूँ ही। पंजाब एण्ड सिंध बैंक तो मेरी अपनी फैमिली की तरह ही हो गया है। शाखा में ज्यादतर महिलाएं हैं और ये तो मेरी बेटियों की तरह ही हैं।

फिल्मी दुनिया के प्रसिद्ध संगीतकार खय्याम साहब का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। पद्मभूषण, फिल्म फेयर लाइफटाइम एचीवमैंट अवार्ड, बैस्ट संगीतकार का राष्ट्रीय पुरस्कार, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार व भारत सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा अनेक पुरस्कारों से नवाजे गए खय्याम साहब जितने अच्छे संगीतकार हैं, उतने ही अच्छे इंसान हैं और उतने ही अच्छे पंजाब एण्ड सिंध बैंक के ग्राहक भी हैं। जीवन के 90 बसंत देख चुके खय्याम साहब का बैंक से ऐसा गहरा रिश्ता है कि वे ताउम्र केवल हमारे बैंक से ही जुड़े रहना चाहते हैं। उनका और उनकी पत्नी जगजीत कौर(पार्श्व गायिका) का हमारे बैंक के प्रति असीम विश्वास इसी बात से जाहिर होता है कि अपने दिवंगत इकलौते बेटे प्रदीप की याद में बनाए गए 'के पी जे चेरिटेबल ट्रस्ट' की पूरी जिम्मे दारी दोनों ने मुंबई की हमारी जुहू शाखा को ही सौंप दी है।

मुझे जीवन में बड़ी प्रसिद्धि मिली, वाहवाही मिली..... लेकिन पंजाब एण्ड सिंध बैंक से जो अपनापन और प्यार मिलता है, उसका कोई सानी नहीं है। शाखा में ज्यादतर महिलाएं हैं। शाखा प्रबंधक सुश्री चंद्राणी, डीलिंग ऑफिसर इधित पिंटो और सभी लड़कियाँ मुझे अपनी बेटियाँ ही लगती हैं और मुस्कुराते हुए फटाफट काम करती हैं। 'ए कुड़िया मेरियाँ धीयां ने अते वाहेगुरू इना नूं हमेशा चड़दी कला विच रखे'

मुझे पंजाबी भाषा बहुत ही प्रिय है और शायद हमारी पंजाबियत की जड़ें ही हैं जिन्होंने मुझे आज भी पंजाब एण्ड सिंध बैंक से जोड़ा हुआ है।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक पर मेरा इतना भरोसा है कि जीवन भर की कमाई से बनाए अपने 'केपीजे चेरिटेबल ट्रस्ट' की पूरी जिम्मेवारी न केवल उम्र भर के लिए बल्कि मेरे जाने के बाद भी मैंने पंजाब एण्ड सिंध बैंक को ही दी है जिसे वह बखूबी निभा भी रहा है। स्टाफ समय-समय पर बदलता रहा, शाखा प्रभारी भी बदलते रहे पर मुझे कभी भी फर्क नहीं पड़ा।

मैं दिल की गहराइयों से संस्था का शुक्रिया करता हूँ और ईश्वर से, वाहेगुरु से, अल्लाह से दुआ करता हूँ कि यह बैंक सदैव नई ऊँचाइयों को छूता रहे।

Khayyam

आपका,
(खय्याम)

कार्यालय के समय में अपने व्यक्तिगत फोन करते रहना भी भ्रष्टाचार है।

स्वच्छ स्वस्थ और उन्नत भारत

रेनू चौरसिया

''जब अंदरूनी एवं बाहरी स्वच्छता होती है,
तो यह धर्मनिष्ठता से भी आगे होती है।''

– महात्मा गांधी

एक सुन्दर पवित्र समरस और बुराइयों से मुक्त समाज के निमार्ण के लिए बापू के स्वच्छता दर्शन से श्रेष्ठ कोई अन्य दर्शन नहीं हो सकता। इसके लिए समग्र स्वच्छता की आवश्यकता होती है। यदि मन और पड़ोस स्वच्छ नहीं होगा, सच्चे एवं ईमानदार विचार आने असंभव हैं। स्वच्छता दो प्रकार की होती है – आन्तरिक एवं बाह्य स्वच्छता। यह दृष्टिकोण होना चाहिए कि आन्तरिक स्वच्छता को बाह्य स्वच्छता के लिए आवश्यक माना जाये। ''वह जो सच में भीतर से स्वच्छ है, वह अस्वच्छ बनकर नहीं रह सकता।'' यंग इंडिया के एक अंक में बापू ने कुछ इस प्रकार रेखांकित किया था – ''आन्तरिक स्वच्छता पहली वस्तु है जिसे पढ़ाया जाना चाहिए, अन्य सभी बातें, प्रथम सर्वाधिक महत्वपूर्ण पाठ सम्पन्न होने के बाद लागू की जानी चाहिए।''

मानव प्रगति के लिए आंतरिक और बाहरी स्वच्छता आवश्यक है। स्वच्छता, आत्मविकास एवं राष्ट्रविकास का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है और इसे इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है – ''यह पवित्र और आवश्यक है ठीक उसी प्रकार जैसे-एक पवित्र आत्मा के लिए एक स्वच्छ शरीर में रहना उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि किसी स्थान, शहर, राज्य, देश के लिए स्वच्छ रहना जरूरी होता है, ताकि इसमें रहने वाले लोग स्वच्छ और ईमानदार हों'' स्वच्छता का दर्शन अत्यन्त व्यापक है, इस व्यापकता को इस प्रकार समझा जा सकता है – यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वच्छता के साथ-साथ स्वास्थ्य से भी वंचित रह जाएगा। यदि मनुष्य स्वच्छ नहीं है, तो वह स्वस्थ मनोदशा के साथ नहीं रह पाएगा। स्वस्थ मनोदशा से ही स्वस्थ चरित्र का विकास होता है। साथ ही साथ यदि कोई व्यक्ति अपनी स्वच्छता के साथ दूसरों की स्वच्छता के प्रति संवेदनशील नहीं है, तो ऐसी स्वच्छता बेमानी है। उदाहरण के तौर पर इसे अपना घर साफ कर कूड़ा दूसरे के घर के बाहर छोड़ने के रूप में लिया जा सकता है। यदि सभी लोग ऐसा करने लगे, तो ऐसे तथाकथित स्वच्छ लोग अस्वच्छ वातावरण तथा अस्वच्छ समाज का ही निर्माण करेंगे।

स्वच्छता के सन्दर्भ में भारत के परम्परागत विचारों की बात करें तो स्वच्छता के प्रति भारत का दृष्टिकोण पर्याप्त उन्नतशील और आध्यात्मिक है। स्वच्छता को सम्पन्नता से जोड़ा गया है। अनेक पर्व आयोजन, उत्सव सीधे स्वच्छता अभियान के प्रतीक है। जैसे – होली, दीपावली आदि इसी रूप में माने जा सकते हैं। स्वच्छता के प्रति भारत का दृष्टिकोण न केवल बाह्य वातावरण तक सीमित है, बल्कि आन्तरिक स्वच्छता को भी बड़ा महत्व दिया गया है। चंगा मन को गंगा से भी निर्मल माना गया है।

स्वच्छता भावनात्मक, आध्यात्मिक, भौतिक तीनों स्तर पर भारतीयों को प्ररित करती है। कभी-कभी समाज का परम्परागत ढांचा सफाई कार्य को सीमित कर देता है तथा यह कार्य समाज के कुछ विशेष वर्ग तक सीमित मान लिया गया है। सफाई कार्य को समाज के सबसे निम्न बिंदु पर माना गया है, इसके अतिरिक्त भारतीयों में अभी तक सफाई का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। भारतीय समाज एक संक्रमणशील दौर से गुजर रहा है, जहाँ नागरिक-चेतना का अभाव है। भारतीयों में उपेक्षा का भाव भी थोड़ा अधिक है। भारत में कूड़ा प्रबन्ध की व्यवस्था अत्यंत परम्परावादी है। इस संदर्भ में सर्व सुलभ लोकप्रिय तकनीक की अत्यन्त कमी है। इन सबका सम्मिलित प्रभाव यह हुआ कि मन से साफ-सुथरा होने पर भी भारत गंदा पर गंदा दिखाई देता है। एक व्यापक सफाई अभियान की माँग करता है।

वर्तमान में स्वच्छता के प्रति भारतीयों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आ रहा है। इस वैचारिक परिवर्तन के लिए कई कारक उत्तरदायी हैं। गन्दगी के कारण संक्रामक बीमारियों का तेजी से प्रसार हुआ है। बर्तमान में विभिन्न रोग-हैजा, मलेरिया, टाइफाइड, अतिसार, डेंगू आदि जानलेवा बीमारियाँ फैली हैं मानव जीवन में मृत्यु एक ऐसा सत्य है जिससे कोई मुँह नहीं मोड़ सकता। इसलिए असामयिक मृत्यु रोकने के लिए मृत्यु के इन कारणों से बचने का उपाय आना स्वाभाविक है। समाज में धीरे-धीरे भौतिक सम्पन्नता बढ़ी है। भौतिक सम्पन्नता मनुष्य को शरीर, परिवेश, वातावरण से आकर्षक बनने को प्रेरित करती है।

स्वच्छता अभियान की और परिवेश के प्रति साफ-सफाई के इस रूझान

माफ करना और कुछ बातों को भूलना सीखें।

को भौतिक सम्पन्नता से जोड़कर देखा जा सकता है।

आधुनिक काल में शिक्षा का तेजी से प्रसार हुआ तथा मीडिया ने भी लोगों में स्वच्छता और स्वास्थ्य से संबंधित जागरूकता फैलाई है, जिससे सफाई के प्रति जागरूक होना स्वाभाविक है। इक्कीसवीं शताब्दी तक आते-आते समाज पर गन्दगी का इतना प्रभाव पड़ने लगा है कि यह देश और समाज के लिए चुनौती बन गया है। इसलिए पर्यावरण सुरक्षा, नदी स्वच्छता के साथ-साथ नगर, गाँव, गली आदि की स्वच्छता के लिए एक प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई। स्वच्छता के प्रति रूझान को वैश्वीकरण के प्रभाव से जोड़कर देखा जा सकता है। पूरी दुनियाँ में स्वच्छ नगरों की जीवन शैली के प्रति लोगों में स्वाभाविक आकर्षण बढ़ रहा है। इससे अन्य क्षेत्रों में भी स्वच्छता के प्रति आकर्षण पैदा हो रहा है। स्वच्छता से स्वस्थ समाज प्रत्यक्ष दिखाई पड़ने लगा है। मनुष्य के जीवन स्तर में सुधार है। मानव विकास सूचकांक रिपोर्ट 2004 में भारत की स्थिति में सुधार हुआ है। भारत में मनुष्य की जीवन प्रत्याशा में सुधार हुआ है जो कि वर्तमान में 67.7 हो गई है। स्वास्थ्य सुधार स्पष्ट दिखाई दे रहा है। मनुष्य की कार्य क्षमता बढ़ी है, जिससे भारत देश की अर्थव्यवस्था में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

बापू स्वच्छता का सबक सिखाते हुए कहते हैं - "जिस प्रकार हमें अपनी व्यक्तिगत साफ-सफाई की चिंता होती है, उसी प्रकार हमें अपने आस-पास, बस्ती, कस्बे और शहर की सफाई के प्रति भी जिम्मेदार होना पड़ेगा।" यह जिम्मेदारी प्रमुख नागरिक कर्त्तव्य है। बापू के इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर भारत ने स्वच्छता की तरफ एक कदम बढ़ाया है।

"मैं स्वच्छता के प्रति कटिबद्ध रहूँगा और इसके लिए समय दूँगा। मैं न तो गंदगी फैलाऊँगा और दूसरों को फैलाने दूँगा।"

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गाँधी जयन्ती के अवसर पर 2 अक्तूबर 2014 को देशवासियों को स्वच्छता अभियान को लेकर जो शपथ दिलाई, ऊपर की पंक्तियों में उसका निहितार्थ है। इसी के साथ भारत में स्वच्छता अभियान का श्री गणेश हुआ। भारत को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने का यह अटूट अभियान बापू की 150वीं जयंती 2 अक्तूबर 2019 को समाप्त कर, हम बापू के साफ-सुथरे भारत के सपने को साकार कर सकेंगे। निःसंदेह इस अभियान ने देशवासियों को स्वच्छता का बोध कराया है। हम सभी का यह दायित्व है कि हम सभी इस अभियान को सफल बनाने में अपना योगदान दें। स्वच्छ भारत से ही हम मजबूत भारत की तरफ बढ़ेंगे।

भारत को सम्पूर्ण रूप से स्वच्छ बनाना आसान नहीं है, अनेक चुनौतियाँ हैं। आजादी के इतने वर्षों के बाद भी हम स्वच्छता के अनुकूल ढाँचा नहीं खड़ा कर पाए हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अन्तिम आँकड़ों से पता चलता है कि कृषि प्रधान इस देश में गाँवों के 67.3 प्रतिशत घरों में शौचालय नहीं है। देश में 626 मिलियन लोग खुले में शौच करते हैं। शहरों में कचरा निस्तारण और प्रबंधन की समुचित व्यवस्था नहीं है। जैसे-जैसे आबादी बढ़ रही है, वैसे-वैसे कचरे की मात्रा भी निरन्तर बढ़ती जा रही है। एक शहरी व्यक्ति एक वर्ष में औसत 165 किलो कचरा उत्पन्न करता है। शहरों में जगह-जगह कचरे के ढेर लगे होते हैं। कचरा किस प्रकार समाज के लिए समस्या बना हुआ है, बताना कठिन है। समस्याएँ निरन्तर बनी हैं नालों के मुँह नदियों, तालाबों और झीलों की ओर मोड़ दिए गए हैं। देश की 87 बड़ी नदियों में 3000 बड़े नालों का जहरीला पानी और अवशिष्ट गिराया जा रहा है। जहरीले अवशिष्ट भूगर्भीय जल को भी दूषित करते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में 22 तरह की बीमारियां कचरे की देन हैं। इससे होने वाली बीमारियों के कारण एक व्यक्ति पर सालाना 650 हजार रूपये का अतिरिक्त बोझ बना हैं। इस प्रकार की समस्याएँ सम्पन्नता तथा विकास में बाधक है। व्यवहारिक बाधाएं भी कम नहीं हैं। हम ऐसी जीवन शैली का विकास नहीं कर पाए हैं जो कि कचरे के उत्पादन को सीमित कर सके, जबकि स्वच्छता अभियान की सफलता के लिए यह नितांत आवश्यक है। हमारे ज्यादातर शहर गंदगी से बजबजाते रहते हैं। गाँवों में खुले में शौच की जो आदत बन चुकी है, वह छूटती नहीं दिखाई देती। स्वच्छता के प्रति जागरूकता में इतनी कमी है कि हम अपने घर की साफ-सफाई दहलीज तक ही करते हैं। बाहर पड़े कूड़े-कचरे से बेपरवाह रहते हैं। रास्ते चलते कहीं भी थूक देते हैं। सार्वजनिक स्थलों को गंदा करने की हमारी प्रवृत्ति बन चुकी है। हमारे प्रवृत्तिगत अवरोध भी कम गम्भीर समस्या नहीं है।

सुखद यह है कि स्वच्छता के लिए हम फिर से संकल्पबद्ध हुए हैं और सरकार भी इसके लिए मजबूती से आगे आई है। 2049 तक चलने वाले

इस अभियान को दो भागों में बांटा गया है - ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत एवं शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत। इस अभियान के तहत 66,575 घरों में रोजाना शौचालय बनेंगे, ताकि 5 वर्षों में प्रत्येक घर को शौचालय देने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। 56,928 अतिरिक्त शौचालय ग्रामीण स्कूलों में बनेंगे, साथ ही देश के प्रत्येक स्कूल व शिक्षण संस्थानों में लड़के-लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय बनेंगे।

स्वच्छता अभियान का दायरा अत्यन्त व्यापक है। घर, स्कूल, अस्पताल, गलियां, सड़कें, बाजार, सरकारी कार्यालय, कार्यस्थल, रेलवे स्टेशन, बस अड्डे, मूर्तियाँ, पार्क, स्मारक व अन्य सार्वजनिक स्थल, पर्यटन स्थल, तालाब, झीलें एवं नदियां आदि इसमें सम्मिलित हैं। स्वच्छता अभियान को विशेष रूप से पर्यटन से भी जोड़ा जा सकता है। पर्यटन की दृष्टि से देश के 50 महत्वपूर्ण शहरों को साफ-सुथरा किया जायेगा। अभियान के तहत कचरा निष्पादन प्रबंधन एवं अपशिष्ट जल प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जा रहा है। ''वाशा'' योजना के तहत इस अभियान में अमेरिका भी मदद करेगा।

स्वच्छ भारत अभियान के लिए कुछ 1,96,009 करोड़ रूपये के भारी-भरकम बजट का बन्दोबस्त किया है। इसमें 25 प्रतिशत खर्च राज्य सरकारें करेंगी। जम्मू-कश्मीर व पूर्वोत्तर राज्य केवल 10 प्रतिशत राशि खर्च करेंगे। पूरी संकल्पना के साथ स्वच्छता अभियान की व्यापक रूपरेखा तैयार की गई है। इससे स्पष्ट होता है कि इस अभियान में पूरा देश समादृत है।

सर्वविदित है कि केवल राजनीतिक इच्छा शक्ति के बल पर कोई भी अभियान सफल नहीं हो सकता। इसके लिए जन सहयोग भी आवश्यक होता है। इस आवश्यकता को समझते हुए भी महात्मा गांधी ने इस बात पर बल दिया था कि यदि लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ दूसरों तथा समाज को स्वच्छ रखने में सहयोग नहीं देंगे तो ऐसे लोगों से मिलकर बने समाज में स्वच्छता, स्वास्थ्य, पोषण आदि की केवल मांग की जा सकती है, जो कभी भी पूरी नहीं हो सकती। अतः खुद स्वस्थ रहना जितना अवश्यक है, उतना ही जरूरी यह भी है कि हम दूसरों के लिए गंदगी न फैलाएं। यह सिर्फ स्वच्छ व स्वस्थ रहने से ही नहीं, बल्कि एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से संवेदनशील तथा समाज के प्रति जिम्मेदारी के भाव को दर्शाता है। प्रत्येक व्यक्ति जो गंदगी फैलाता है उसे उसकी सफाई खुद करनी चाहिए, इसमें ऊँच-नीच का कोई भाव नहीं होता। यदि सभी व्यक्ति ऐसा करने लगें तो इससे स्वच्छ समाज के साथ समरस सामाजिक संरचना वाले समाज का निर्माण भी होगा। ऐसे स्वच्छ समाज से ही स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण की कल्पना की जा सकती है। अभियान की सफलता के लिए बापू के विचार नितांत प्रासंगिक हैं।

स्वच्छता के अनेक फायदे हैं। अच्छा स्वास्थ्य स्वच्छता से प्राप्त होता है। स्वच्छता से लोग अच्छा स्वास्थ्य तो प्राप्त करेंगे ही साथ ही उनके जीवन की भी रक्षा सम्भव हो सकेगी। आँकड़ों के अनुसार खुले में शौच करने से लगभग दो लाख लोगों की मृत्यु होती है। खुले में शौच के कारण जल-खाद्य प्रदूषित हो जाते हैं। डायरिया जैसे प्रकोप बढ़ते हैं। इतना ही नहीं छोटे बच्चों में मानसिक विकार उत्पन्न होता है। खुले में शौच के कारण त्वचा नेत्र, आंत, गुर्दा, तपेदिक तथा गिल्टी जैसी अनेक बीमारियां पांव पसारती हैं। स्वच्छता से इन समस्याओं से छुटकारा मिलेगा। स्कूलों तथा शिक्षण संस्थाओं में महिलाओं के लिए अलग शौचालय से महिला सुरक्षा भी बढ़ेगी। जब हम स्वच्छ रहेंगे तो भरपूर ऊर्जा के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान कर सकेंगे। भारतीय अर्थव्यवस्था विकसित होगी तो स्वस्थ शरीर में वास करने वाले स्वस्थ मष्तिष्क में अच्छे विचार और संस्कार पुष्पित-पल्लवित होंगे। देशवासियों में उत्तरदायित्व और जिम्मेदारी के भाव का विकास होगा।

यह सुखद है कि भारतीय संस्कृति स्वच्छता की संस्कृति के नाम से जानी जाती है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति और सभ्यता की मूल चेतना ही पवित्रता और शुचिता अर्थात् स्वच्छता ही इन दोनों में से एक रही है। हमारे मनीषियों ने ऐसी जीवनचर्या का निर्धारण किया जो शारीरिक पवित्रता के साथ-साथ बाहरी पवित्रता एवं वातावरण की स्वच्छता को भी बनाए रख सकें। बापू ने साफ-सफाई को ईश्वर से जोड़ा।

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा
कश्चित् दुखभाग भवेत्।।

ये दुनिया दिखती अच्छी है

अशोक कुमार

कहीं है वो आग सी भड़कती, तो कहीं है ये समुद्र सी शीतल।
कहीं है आकांक्षाओं से भरी, तो कहीं दिखती निराशा है भीतर।।
कहीं दिखती है वो नन्हीं सी परी खूबसूरत... हँसती खेलती।
तो कहीं दिखती है असहाय और समाज के दुखों को झेलती।।
कहीं तो देख नहीं पाती इस दुनिया की थोड़ी सी भी छवि।
और कभी रचती है रचना ऐसे... जैसे लिखता हो कोई कवि।।
कहीं मिले लोग जिन्होंने सँवारा खुद को और बिगाड़ा किसी को।
कहीं देखे ऐसे भी, जिन्होंने चाहा किसी को और पाया था किसी को।।
कहीं गया तो वो शख्स भी मिला, खड़ा था वो अपनी ज़िंदगी से दूर।
दे रहा था बलिदानी, क्या याद करेगी दुनिया उस कुर्बानी को भरपूर।।
लोगों को सोचते था देखा, समझते नहीं।
देखा था लोगों को मरते, पर जीते नहीं।।
जब देखा शाम को परिंदों को लौटते अपने घर।
तो जाना, आना है लौट कर हमें भी अपने घर।।
फिर मिला मैं एक शख्स से, था वो भी एक परिंदा।
आखिर निकला था कहीं ढूँढने, वो भी मेरी ही तरह।।
पर जिसे थे हम ढूँढते, इस दुनिया के झोल-झमेलों में।
क्या मालूम था, वो मिलेगा अपने ही रंगों के मेलों में।।
जब देखा मैंने अपने भीतर, तो ही मैं समझ पाया।
वो आकाश था या समुद्र, तभी तो मैं जान पाया।।
उसी क्षण मैं जान पाया कि था सब कुछ मेरे ही अंदर।
पर ये दुनिया भी थी कितनी सुंदर, थे इसके बड़े बवंडर।।
इस दुनिया के अजब रंग, ये कहानी बिलकुल सच्ची है।
ये दुनिया दिखती अच्छी है, ये दुनिया दिखती अच्छी है।।

अधिकारी, शाखा सैक्टर 40, चंडीगढ़

बैठक

दिनांक 06/09/2017 को बैंक के प्रधान कार्यालय की तिमाही बैठक का आयोजन बोर्ड रूम में किया गया जिसकी अध्यक्षता माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरबीर सिंह (आई.ए.एस.) ने की ।

संगोष्ठी

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा संगोष्ठी का आयोजन

आँचालिक कार्यालय भोपाल में संगोष्ठी का आयोजन

निदंक नियरे राखिए........कबीरदास

अर्चना शर्मा

गलती करना मानव का स्वभाव है, अर्थात् मनुष्य गलतियों का पुतला है, यह एक चिरंतन निर्विवाद सत्य है। यदि हम यह कटु सत्य समझ लें तो हम भाँति-भाँति के मिथ्या अहं भाव से उत्पन्न निष्फलता से अपने आपको बचा सकते हैं, परन्तु यह समझकर हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाना भी उचित नहीं। अपने आप को सुधार पाने व नई ऊँचाईयों को पाने का पूरा प्रयास/ प्रयत्न करना अति आवश्यक है। स्वयं अपने दोष और अपनी कमियाँ पहचान पाना असम्भव तो नहीं परन्तु बहुत कठिन है। इसलिए उन व्यक्तियों का जो हमारे गुण- दोष का विश्लेषण करते हुए समय रहते हमें बता सकें, बहुत महत्वपूर्ण है। पर उसके लिए आवश्यक है उनके विश्लेषण को सकारात्मक रूप से शिरोधार्य करना । अतः हमें आलोचक का उपकार मानना चाहिए और उससे नाराज होकर कन्नी नहीं काट लेनी चाहिए, अक्सर ऐसे परोपकारी व्यक्ति हमारे जीवन में सर्वप्रथम हमारे माता- पिता होते हैं। तत्पश्चात् अध्यापक, मित्रगण तथा सहकर्मी भी होते हैं।

सकारात्मक रूप से स्वीकार की गई आलोचना अर्थात् उनके द्वारा की गई आलोचना को हमने किस प्रकार से, सकारात्मक रूप में स्वीकार किया है यह हमारे व्यक्तिव का निर्णायक मापदंड होता है, तथा हमें सफलता के कगार पर खड़ा करने में सहायक होता है। सकारात्मक रूप से स्वीकार की गई आलोचना हमारे व्यक्तिव में कई तरह के गुणों को लेकर आती है ऐसा व्यक्ति एक अच्छा श्रोता बन जाता है, दूसरों के प्रति संवेदनशील बन जाता है। दूसरों के सुख- दुख को समझने लग जाता है। दूसरे के प्रति उसके हदय में क्षमाभाव जागृत होता है। इसी तरह के व्यक्ति समाज के उत्थान में सहायक होते हैं।

रचनात्मक आलोचना स्वयं को अंतर्दर्शन, आत्म मंथन के लिए प्रेरित करती है व विनम्रता की जननी होती है। हम यह जान जाते हैं कि गलतियां अन्य व्यक्ति ही नहीं करते, अपितु हमारी भी बहुत सी कमजोरियाँ हैं। कई बार इस आलोचना ने संसार को दुर्लभ रत्न उपलब्ध करवाएं है। तुलसीदास न बन पाते अमर, रामचरितमानस की रचना न कर पाते यदि उनकी पत्नी की आलोचना उनके हृदय पटल पर अंकित न हो गई होती ।

एक अन्य उदाहरण --- वाल्ट डिजनी का है, जो समाचार पत्र में लेखन कार्य करते थे, उस पत्रिका के संपादक ने उन्हें यह कहकर निकाल दिया कि उनके पास अच्छी कल्पना तथा विचारों का अभाव है यह बात उनके हृदय में लग गयी तथा उन्होंनें अपने आप को, अपनी कल्पना को, इतना ऊँचा उठाया कि डिजनीलैंड संरचना कर दी । यह तो रही महापुरूषों की बात ।

जब हमारे निजी जीवन में कोई हमें यह बताता है कि हमारा नजरिया किसी परिस्थितियों को सुलझाने का अकेला नजरिया नहीं है,तो वह हमें उसके अन्य पहलू जानने की प्रेरणा देते हैं। उस परिस्थिति का विश्लेषण विभिन्न ढंगों से करना भी सिखाता है। खुद को सही साबित करने के लिए कभी रक्षात्मक नहीं बनना चाहिए।

रक्षात्मक बनने पर हम कुतर्क का शिकार बन जाते हैं और नाराज हो जाते हैं जो हमारे अन्दर की कमजोरियों को दर्शाता है। धीरे- धीरे इस तरह के व्यवहार से प्रियजन हमसे कटने लगते हैं और हम उनकी मूल्यवान शिक्षा से वंचित हो जाते हैं। जब हम इस विचारधारा को अपने कर्मक्षेत्र में अनुपालन करते हैं तो अपने घर, व्यवसाय, मित्रमंडली सभी जगह एक सुकून भरे वातावरण का आह्वाहन करते हैं। और अभिमान के अवगुण से दूर रहते हैं। और हरक्षेत्र में जीवन को सद्भावना पूर्ण बनाते हैं। सकारात्मक आलोचना में जिन्दगी को बदलने की ताकत है।

लोगों के साथ आमतौर पर यह समस्या होती है कि वे झूठी प्रशंसा के द्वारा बर्बाद होना पसंद करते हैं परन्तु आलोचना द्वारा संभल जाना नहीं।

एक प्रसन्नचित व्यक्ति का मस्तिष्क संतुलित रूप से कार्य करता है,वह सही निर्णय ले पाता है। आवेश में आकर लिए गये, आलोचना से आवेश में लिए गए निर्णय स्वयं के लिए,व्यवसाय के लिए हरक्षेत्र में हानिकारक होते हैं।

लेकिन यदि हम आलोचना करने वालों को अपना हितैषी समझें तो इससे बच सकते हैं।

कबीरदास जी ने सही कहा है कि ------------

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।

सहायक महाप्रबंधक (अग्रिम)

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज़्ज़त करता हूँ, परंतु मेरे देश में हिंदी की इज़्ज़त न हो, यह मैं हरगिज़ नहीं सह सकता।

– आचार्य विनोबा भावे

कार्टून कोना

पूजा त्रिपाठी
अधिकारी आँचलिक कार्यालय भोपाल

ज़रा सोचिए.....

भारती

बात कुछ समय पहले की है। कार्यालय से घर जाते समय मैंने ऑटो लिया। सड़क पर चल रही खुदाई के कारण नगर निगम द्वारा तिकोने आकार के कुछ साइडर गड्ढे के चारों ओर लगा दिए गए थे ताकि किसी दुर्घटना से बचा जा सके। इसी कारण सड़क पर थोड़ा जाम लग गया था, पर सभी को घर जाने की जल्दी थी। शायद इसीलिए कुछ लोग सुरक्षा को नज़रंदाज करके उस तिकोने साइडर को ही गड्ढे में गिराते हुए चले जा रहे थे। उन्हीं लोगों की भीड़ में से एक लड़का जोकि बहुत कीमती बाइक पर सवार था और काफी बढ़िया कपड़े पहने हुए थे, बाइक से उतरा.. गड्ढे की ओर बढ़ा.. तिकोने साइडर उठाए और उन्हें अपनी जगह रख दिया। इस कारण उसके कपड़े भी थोड़े गंदे हो गए थे। किंतु उसने इस ओर ध्यान नहीं दिया। वह बाइक पर बैठा और अपने रास्ते चला गया, बिना किसी के शुक्रिया का इंतज़ार किए। शायद उसने इसे अपना कर्त्तव्य ही समझा होगा। जाने-अनजाने.. वो कई लोगों और विशेषकर मेरे सम्मान का पात्र बन गया।

क्या आपको भी कभी ऐसा या इससे मिलता-जुलता अवसर मिला? क्या हमने और आपने भी कभी ऐसा किया है? ज़रा सोचिए...

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

बड़प्पन अमीरी से नहीं सज्जनता से आता है।

जननी

उपदेश सिंह सचदेवा

वरजीनिया, अमेरिका में रहते उसे पाँच वर्ष से अधिक हो गये थे। एम.टेक कर के गया था। डिग्री और मार्क्स अच्छे थे, सो अच्छी नौकरी मिल गई। देखने में अच्छा खासा हीरो था। थोड़ी कोशिश की तो लड़की भी चुन ली। वो भी पढ़ी-लिखी थी और नौकरी भी करती थी। उसके माता-पिता भी वहीं के निवासी थे। उन्हें तो वरजीनिया में रहते 20 वर्ष हो गये थे। लड़के का नाम मनीष और लड़की का नाम मनीषा था।

मनीष के वरजीनिया आने से पहले ही पिता का देहांत हो चुका था। भारत में उनका घर दिल्ली में था। पिता सरकारी नौकरी में ठीक पद पर थे। कैलाश - कालोनी में अच्छा घर था। पिता गये तो माँ अकेली रह गई। अधिक पढ़ी-लिखी न थी। अपने बेटे को पढ़ाने, लालन-पालन मे ही जीवन लगा दिया था। जब बेटे ने बताया कि उसकी नौकरी अमेरिका में लग गई है और उसे शीघ्र ही चले जाना है, तो रो पड़ी।

"ठीक है बेटा मैंने कब तक बैठे रहना है। भगवान तुम्हें ठीक रखे। फलो-फूलो"

माँ अपने ही मकान के निचले हिस्से में रहती थी। फस्ट - फ्लोर को किराए पर चढ़ा रखा था। अच्छा किराया आता। सो खान-पान और बाकी जरूरतों का ठीक निपटारा हो जाता। मनीष के पिता की फैमिली-पेंशन भी मिलती।

अचानक एक दिन माँ को मनीष का फोन आया।

"माँ अब हम तुमको भी यहाँ लेने आ रहे हैं। मैं सैटल हो गया हूँ। मनीषा भी जॉब करती है। घर भी है। कोई समस्या नही इकट्ठे रहेंगे। तुम वहाँ अकेली रहो और हम यहाँ, अच्छा नहीं लगता।"

"नहीं बेटा मैं यहाँ ठीक हूँ। मुझे कोई खास परेशानी नहीं। बस तुम दोनों खुश रहो।

"माँ उम्र के साथ-साथ मुश्किले आती हैं। कल को कुछ हो जाए तो क्या करोगी? कौन आएगा सहायता के लिए? हम अगले इतवार को आएंगे और तुम्हें अपने साथ ले जाएंगे।"

माँ सोचने लगी मेरा एक ही तो बच्चा है। जैसी उसकी इच्छा। कल को उनका भी बच्चा होगा तो मुझे साथ मिल जाएगा। दिल लगा रहेगा। जैसी प्रभु की इच्छा। न चाहते हुए भी माँ अंदर ही अंदर से मन बनाने लगी।

अमेरिका से दिल्ली की फ्लाईट में मनीष बचपन से अब तक के जीवन - खास - तौर पर अपनी माँ की कुर्बानियों के बारे में सोच रहा था। माँ जन्म देती है। जननी और फिर क्या-क्या तकलीफें नहीं झेलती बच्चे को पालने - पोसने और बड़ा करने में। यह सोच मनीष की आखों से आंसू बहने लगे।

इतवार का दिन था। सर्दी बड़ी थी। प्रातः के लगभग तीन बजे होंगे। घर के सामने टैक्सी रुकी। अंधेरा था। माँ तो लगभग रात-भर जागती ही थी। पता था, बेटा - बहू आने वाले हैं। लेकिन आया सिर्फ बेटा। माँ ने गेट खोला मनीष ने माँ को झुक माथा टेका। माँ ने मनीष को गले लगाया उसका माथा चूमा। कुछ क्षणों के लिए उसे ऊपर से नीचे तक निहारा फिर बोली बहू कहाँ है?

"वो न आ सकी। डाक्टर ने कहा इस हालत में उसका जहाज से सफर करना ठीक नहीं। सो मैं अकेला ही आया हूँ।"

अगले दिन से ही मनीष ने माँ का पासपोर्ट बनवाने की भागा - भागी शुरू की। कहते है काम करवाना हो तो साम, दाम, भी उपयोग मे लाना पड़ता है। दिन- रात मेहनत कर माँ का पासपोर्ट बन गया।

अब बाकी एक ही काम रह गया था, वो था मकान बेचना। किराएदार को समय दिया कि वो अपना प्रबन्ध स्वंय करले। प्रापर्टी-डीलर से कहा, जितनी भी कमीशन चाहिए लो लेकिन एक हफ्ते में ही मकान बिकवा दो। वो भी काम हो गया - सात करोड़ में। प्रापर्टी-डीलर और किराएदार में फैसला हुआ। किराएदार अमीर था, कहने लगा-

"मैं ही मकान खरीद लेता हूँ। अब आधी जिंदगी हो गई यही रहते।" सो बात बन गई। मनीष ने माँ को बिना बताए सारे कागज़ भी साइन करवा लिए।

लगभग 10 दिन बाद मनीष और माँ ने टैक्सी ली और इंदिरा गांधी एयरपोर्ट की ओर चल पड़े। मनीष ने बताया माँ फ्लाईट सुबह तीन बजे की है। जनवरी माह की ठंड के बीच टैक्सी भागती जा रही थी और माँ की आखों के सामने सारा पिछला जीवन चल-चित्र की भांति भाग रहा था। साथ में भविष्य के बारे मे भी सोच रही थी। मेरे बच्चे खुश तो मैं भी खुश पोता आयेगा। बस उसी की देख - रेख में समय बीतेगा। प्रभु इनको ठीक-ठाक रखे।

मनीष बड़ा खुश था। जैसे कार्यक्रम बनाया था ठीक वैसे ही हुआ। भगवान का शुक्र है। अब जीवन सुखद बीतेगा। मनीषा भी चिक-चिक करती रहती थी। अब फर्क पड़ेगा।

एयरपोर्ट आया टैक्सी वाले को बिल दिया। समान उतारा। दो अटैची और दो ही बैग थे। बस एक अटैची एक बैग मनीष ने ट्राली में रखा। एक बैग और एक अटैची माँ के पास छोड़ दिया और माँ से बोला-

"माँ, मैं अंदर जा बोर्डिंग कार्ड ले आता हूँ। पाँच-दस मिनट लगेए। तुम यहीं रहना। सामान का ध्यान रखना। यहाँ के लोग बड़े चोर हैं। जरा सा ध्यान इधर से उधर हुआ नहीं कि सामान उठा लेते है। शराफत का कोई नाम ही नहीं यहाँ।"

मनीष गया। पहले आधा घंटा फिर एक घंटा, फिर दो। माँ अकेली बैठी रही। कई बार सोचा मनीष को इतनी देर क्यों लग रही है। तंग आ उसने आस-पास खड़े कर्मचारियों से पूछा।

"बेटा ये अमेरिका जाने वाला जहाज देर से जाएगा क्या।"

"कौन सा माँ जी?"

"दो घंटे से मेरा बेटा मुझे यहाँ छोड़ अंदर गया है कह कर कि पाँच दस मिनट मे आ मुझे अंदर ले जाएगा।"

माँ जी, अमेरिका जाने वाला जहाज तो एक घंटा पहले उड़ गया। हाँ माँ, मैं यहाँ का कर्मचारी हूँ और तुम्हे ठीक पक्की तरह से बता रहा हूँ। वो जहाज तो कब का जा चुका।

सेवा निवृत्त सहायक महाप्रबंधक

पी. एण्ड एस. बैंक

समय की कभी छुट्टी नहीं होती, सदा चलता ही रहता है।

विमोचन

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति के संयोजक श्री हुक्मदेव नारायण यादव जी के कर कमलों द्वारा पी एण्ड एस बैंक ''राजभाषा अंकुर'' के जून 2017 के अंक का विमोचन किया गया। समिति के सदस्यों तथा बैंक के अधिकारियों के साथ वित्त मंत्रालय के अधिकारीगण भी दृष्टव्य है।

हमें इन पर गर्व है

श्री उदय सिंह

बैंक की शाखा विकासपुरी में एक ग्राहक सुश्री सुरजीत कौर का लॉकर है। उनका लॉकर नं. 650 एवं लॉकर संख्या.326 है। ग्राहक, शाखा विकासपुरी में दिनांक 04.03.2017 को लॉकर प्रयोग के लिए गईं थीं, परन्तु उनके कुछ सोने के आभूषण लॉकर रूम में छूट गए थे। विकासपुरी शाखा के श्री उदय सिंह, अंशकालिक सफाई कर्मचारी को इस ग्राहक के गुम हुए सोने के आभूषण, लॉकर रूम की सफाई करते समय मिल गए। आभूषण उसने शाखा प्रबंधक के सामने लॉकर अभिरक्षक को सौंप दिए। श्री उदय सिंह, अंशकालिक सफाई कर्मचारी को सराहना पत्र भी विकासपुरी शाखा के ग्राहक ने लिखकर भेजा है। हमें अपने ऐसे कर्मचारी पर गर्व है।

रचनाकारों से निवेदन

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका ''राजभाषा अंकुर'' में प्रकाशन हेतु रचना भेजते समय कृपया रचना के अंत में अपना नाम, घर का पता, शाखा/कार्यालय का पूरा पता, पेन नंबर, मोबाइल नंबर तथा अपने बैंक का खाता संख्या (14 अंकों का) तथा आईएफसी कोड भी अवश्य लिखें। साथ ही मौलिकता प्रमाण-पत्र अवश्य भेजें।

हमारे अन्नदाता के साथ हैं क्या विधाता ?

मनीषा खटीक

हमारा देश मुख्य रूप से कृषि प्रधान देश है। देश की कुल जनसंख्या की लगभग 70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण अंचलों में निवास करती है और उनका जीवन मुख्य रूप से कृषि पर आधारित होता है। किसान हमारे देश की रीढ़ की हड्डी हैं, लेकिन फिर भी ये वर्ग सब से अधिक उपेक्षित है। निश्चित रूप से यह बहुत ही दुखद परिस्थिति है। ज़रा कल्पना करके देखिए, यदि इन्होंने खेती करना बंद कर दिया तो हम सब का क्या होगा? क्या हम सिर्फ पैसे कमा कर पेट भर सकते हैं?

किसानों की स्थिति पर चुनाव के दौरान राजनैतिक समूह बहुत सी बातें करते हैं और वादे भी खूब किए जाते हैं लेकिन चुनाव समाप्त होने के बाद यह चर्चा बंद हो जाती है और उनकी स्थिति जस की तस बनी रह जाती है। आज हमारे किसान जिस बदहाल स्थिति में जीवन बिताने के लिए मजबूर हैं उसका वर्णन करना भी बहुत दुखद है। आए दिन देश के अलग - अलग राज्यों से किसानों की आत्महत्या की खबरें सुनने को मिलती हैं। ऐसी स्थिति निश्चित रूप से चिंताजनक है। आज से 100 साल पहले गांधी जी ने चंपारण से किसान आंदोलन शुरू किया था। तब चंपारण के साथ - साथ देश के अन्य भागों में भी किसान आंदोलन ज़ोर शोर से उठने लगे थे। उस समय हमारे देश में अंग्रेज़ों का शासन था और भारतीय किसानों को नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जाता था तथा उनसे भारी मात्रा में कर संग्रहण किया जाता था। कर न देने पर उन्हें कठोर दंड दिया जाता था। अब यह विचारणीय प्रश्न है कि तब के समय में और अब के समय में किसानों की परिस्थितियों में क्या बदलाव आया है? वैसे आज के समय में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है उनकी परिस्थितियों में। समस्याओं के चेहरे बदल गए हैं। ये और भी दुखद स्थिति है। क्योंकि आज के समय में हम सब ज़िम्मेदार हैं, किसानों के बुरे हालात के लिए। 100 साल पहले तो वे विदेशी लोग थे जिन्होंने हमारे किसानों का बुरा हाल किया लेकिन आज सब कुछ हमारा है फिर भी किसान सुखी नहीं हैं। यह एक संवेदनशील प्रश्न है, हम सवा सौ करोड़ भारतीयों के समक्ष। हमारे देश के हर राज्य का किसान कृषि के लिए आधारभूत सुविधाएं जैसे बीज, खाद, पानी, कीटनाशक दवाएं, बाजार, सड़कें और यातायात की सुविधा आदि से वंचित है। सभी व्यवस्थाएं उन्हें आवश्यक रूप से प्राप्त होनी चाहिए। किसानों के लिए यातायात का ठीक न होना एक बहुत ही बड़ी समस्या है। जिसके कारण वह पैदावार करके भी यातायात ठीक न हाने के वजह से उचित मूल्य पर अपना अनाज बेचकर मुनाफा कमा सकते हैं। ज़्यादातर हमारे किसान साहूकारों और बड़े - बड़े ज़मींदारों के कर्ज़ तले दबे हुए होते हैं और वो मनमाने ढंग से ब्याज वसूली करते हैं। यदि किसी फसल के समय प्रकृति की बेरूखी की मार पड़ जाती है तो इनके लिए और मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं। प्रति वर्ष देश के किसी ना किसी हिस्से को सूखा या बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं की मार झेलनी ही पड़ती है। ऐसी स्थिति में इनका हाल बहुत बुरा हो जाता है और कर्ज़ इतना बढ़ जाता है की ये लोग चुकाने की स्थिति में होते ही नहीं हैं। जिसके कारण किसान मजबूर हो जाते हैं आत्मा हत्या के लिए।

इस गंभीर समस्या से पार पाने के लिए बैंक को और अधिक बढ़ कर आगे आना होगा। बैंकों को ग्रामीण इलाकों में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करनी होगी। किसानों की संख्या में लगातार कमी आती जा रही है। इसका मुख्य कारण है, लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। इसको रोकने के लिए युवाओं को अधिक से अधिक कृषि के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और उचित प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए ताकि वे अपनी आजीविका गाँव में ही रह कर चला सकें। इसके साथ - साथ खेती के लिए आवश्यक सुविधाएं ठीक समय पर उपलब्ध करानी चाहिए। यह कल्पना कर के देखिए यदि किसान खेती करना छोड़ दें तो क्या हम अपना पेट भर सकते हैं? हम सभी लोगों के लिए यह एक विचारणीय प्रश्न है कि कौन बनेगा इनका भाग्य विधाता ?

आंचलिक कार्यालय कोलकाता

अच्छे विचारों को अपने कर्मों में परिवर्तित करें।

गौरव के क्षण

19 सितंबर, 2017 को एशिया प्रशांत एचआरएम कांग्रेस के 16 वें संस्करण में बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री फरीद अहमद जी को एचआर के भारत के सर्वश्रेष्ठ नेता का पुरस्कार प्रदान किया गया।

हार्दिक अभिनंदन

छपते छपते

बैंक की शाखा हलसुरू, बेंगलुरू में हमारे नए कार्यकारी निदेशक श्री गोविंद एन. डोंग्रे जी का फूलों से अभिनंदन करते हुए श्री डी. कण्णन, आँचलिक प्रबंधक, चेन्नै तथा शाखा के समस्त अधिकारी गण।

੧ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ ॥

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

जहाँ सेवा ही जीवन-ध्येय है

पी.एस.बी

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

Where service is a way of life

द्वारा आयोजित

फेस्टिवल बोनान्ज़ा स्कीम

आवास,ऑटो एवं व्यापार ऋण के लिए

21-09-2017 से 31-12-2017 तक

आवास ऋण
HOUSING LOAN

- शून्य प्रोसेसिंग फीस
- न्यूनतम मासिक किस्त
- आकर्षक ब्याज दर*
- अधिकतम भुगतान समय 40 वर्ष तक

ऑटो ऋण
AUTO LOAN

- शून्य प्रोसेसिंग फीस
- न्यूनतम मासिक किश्त
- आकर्षक ब्याज दर *
- अधिकतम भुगतान समय 7 वर्ष तक

पी एस बी PSB

मॉर्टगेज ऋण MORTGAGE LOAN	व्यापार ऋण VYAPAR LOAN	एस.एम.ई. लिक्विड प्लस SME LIQUID PLUS

- सभी व्यापारियों एवं औद्योगिक ग्राहकों के लिए
- 50% छूट-प्रोसेसिंग फीस पर
- आकर्षक ब्याज दर*
- व्यक्तिगत एवं कार्यशील पूंजी ऋण आवश्यकतानुसार
- सरल प्रोसेसिंग प्रक्रिया

कॉम्बो प्रस्ताव के अन्तर्गत ऑटो-आवास ऋण पर आकर्षक शर्तों का लाभ उठाएं

अधिक जानकारी के लिए हमारी शाखा से संपर्क करें अथवा हमारी वेबसाइट www.psbindia.com पर जाएं। *शर्तें लागू